आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 22 | उदयपुर शनिवार 01 दिसंबर 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

चुनाव, चाचा और चमचा

- डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना -

अकस्मात बाहर शोर सुनाई दिया। कान लगाया तो सड़क पर जुलूस जा रहा था। उत्सुकता बढ़ी तो खिड़की पर रंगे हाथ आ धमके। देखा, एक मोटा सा आदमी घोड़े पर बैठा है और उसके पीछे भीड़ थी जो कुछ बैनर लिए नारे लगा रही थी।

धर्मपत्नी आ धमकी और एक घुड़की पिलाई- काम धाम होता नहीं और ताक-झांक करते रहते हो। अब सड़क की ओर क्या देख रहे हो? चुप भी रहो ! यह किसका जुलूस निकल रहा है ; देखने दो - बड़ा अजीब सा लग रहा है। जुलूस पास आया। चश्मा ऊंचा-नीचा किया, ऐंगल मिलाया- अरे वाह ! यह तो शहर का दादा है- कुम्भकर्ण ; मोटा, भद्दा, काला, बड़ी-बड़ी मूंछें। डरावनी सी शक्ल। ये आज कार की बजाय घोड़े पर। फिर यह जुलूस कैसा? नारे सुनाई दिये- हमारा नेता कैसा हो ? कुम्भकर्ण चाचा जैसा हो। जीतेगा भाई जीतेगा - कुम्भकर्ण चाचा जीतेगा। इस बार कौन? चाचा कुम्भकर्ण के अलावा कौन?

कुम्भकर्ण मूंछों को ऐंठते हुए ऐसे बैठे हुए थे मानो बारात में दूल्हा जा रहा हो। मुझे घोड़े पर दया आ गई। अभी नहीं तो इस भैंसें को उठाये एक-दो घण्टे बाद ईश्वर को प्यारा हो जायेगा। जुलूस मंथर गति से आगे बढ़ रहा था। अभी तो चुनाव की तिथियों की घोषणा हुई। आचार संहिता लगी हुई है। उम्मीदवारों के नामांकन भरने की तिथि आ रही है और ये नये नेता मारकूट व वसूली का धंधा छोड़ कर चुनाव लड़ने की तैयारी में लगते हैं।

मेरी जिज्ञासा बढ़ी। रंग के हाथ साफ कर सड़क पर आया और जुलूस में उत्साह से लगे सड़क छाप एक चमचे को आदर के साथ पकड़ा, भैय्या! क्या यह कुम्भकर्ण चुनाव लड़ेगा ! वह सड़क छाप छुटभैय्या भी नया-नया ही चलताऊ नेता बना था। उसे इतने आदर के साथ किसी ने 'भैय्या' नहीं कहा था अत: वह रूक गया। बोला- आगे से आप संभल कर बोलें- ये चाचा कुम्भकर्णजी हैं और इस बार चुनाव लड़ने का इरादा कर लिया है।

मैंने प्रश्नात्मक दृष्टि से उसे देखते हुए कहा- 'चाचा करते क्या हैं? कामधन्धा!' वह हंसा- 'इन्हें काम करने की जरूरत क्या है? कई शिष्य हैं। पूरे शहर में क्या राज्य में इनका डंका बजता है। पुलिस अफसर भी सलाम ठोकते हैं। ये डॉन हैं-डॉन।' इनके इशारा करते ही दुकानें, बाजार बन्द हो जाते हैं। कर्फ्यू लग जाता है।

वह तो ठीक है। मैं इनका साक्षात्कार लेना चाहता हूं। अच्छा! बहुत अच्छा! मेरा भी नाम जाएगा। आप शाम 5 बजे आ जाना इनके निवास पर और वह चल दिया। मैंने पत्नी से जिक्र किया तो वह पहले तो घबरा गई फिर रोने लगी। मैंने कहा- 'चिन्ता मत करो। वह चुनाव लड़ रहा है। ऐसा-वैसा कुछ नहीं होगा।' ऐसा-वैसा क्या? आफत क्या पूछ कर आती है। वह बोली।

समझाबुझा कर मैं चाचा कुम्भकर्ण के आवास पर शाम 5 बजे पहुंच गया। हिम्मत की कीमत है। उनके घर पर रौनक थी। अनेक मुस्टण्डे इधर-उधर घूम रहे थे। आग्नेयास्त्र उनके पास थे। अज्ञात भय से एकबार तो लौटने की इच्छा हुई फिर सोचा ओंखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डरना? चाचा को चमचे ने तैयार कर दिया था। वे आये- धम्म से सोफे पर पड़ गए। बोले- अच्छा साक्षात्कार लेना है। मेरे को के. के. (कचरूकुमार) ने कहा था। बोलो क्या पूछना है? वे मुस्कराये।

चाचा का मुस्कराहट वाला चेहरा देखकर मुझे रामलीला का कुंभकर्ण याद आ गया। उसका भयानक रौद्र रूप। मुंह में शब्द बड़ी मुश्किल से आये- मैं-मैं- आप चुनाव लड़ रहे हैं-शायद आपने चुनाव लड़ने का मन बना लिया है। कुंभकर्ण ने अट्टहास किया मानो खाली ड्रम में किसी ने जोर से पत्थर फैंक दिया हो। वह बोला- लोगबाग मान नहीं रहे हैं। कई को चुनाव लड़ा चुके हैं अत: इस बार हम खुद ही चुनाव लड़ेंगे।

किस पार्टी से लड़ेंगे? मैंने हिम्मत कर पूछा। जोर का ठहाका गूंजा। बोले- यह भी कोई सवाल है। हमें तो सभी पार्टियां टिकिट देने को तैयार हैं। किसे ऐसा उम्मीदवार मिलेगा। फिर भी आपने भी तो कुछ विचार किया होगा? उन्होंने मुझे घूरा- उनके पट्ठे पहलवान खड़े हो गये। उन्होंने उन्हें बैठने का इशारा किया और बोले- विचार क्या करना है। विचार तो सामने वाले को करना है। हम जिस दल से उम्मीदवार होंगे जीत जायेंगे। किसकी हिम्मत है जो हमसे टक्कर ले सके। नहीं तो निर्दलीय- स्वतंत्र लड़ लेंगे। जीतने पर सब दौड़े-दौड़े हमारे पास आयेंगे।

जनता से कैसे वोट मांगेंगे? हम साफ दिल के और साफ बोलने वाले हैं। आम सभा हो या व्यक्तिगत ; कह देंगे, स्पष्ट बोल देंगे कि हमारे नाम- निशान पर बटन दबाना नहीं तो बाद में..... उन्होंने वाक्य अधूरा छोड़ दिया। इशारा साफ था कि फिर वे आदमियों का बटन दबा देंगे। खुली धमकी।

हमारा प्रचार सबसे पहले शुरू हो गया। सभी वार्डों में हमारे सक्रिय कार्यकर्ता हैं। शहर के सभी भले (हमारे अर्थ में दंगाई, गुंडे) आदमी हमारे साथ हैं। जी हां! यह तो दिख रहा है। आप जीतने पर क्या करेंगे? अभी जो कर रहे हैं, वह धंधा तो चालू रहेगा। हां ! विधानसभा से वेतन, भत्ते, हवाई जहाज का किराया, फोन आदि सुविधायें मिलेंगी। बिल्कुल फ्री। आपको कोई काम हो तो बताना।

मुझे लगा अब इनमें असली कुम्भकर्ण की आत्मा उतर रही है। सामने रखा बहुत सारा भोजन डकार चुके हैं। उबासी ले रहे थे। मेरा इंटरव्यू अच्छा छपना चाहिये। पीली, नीली पत्रकारिता मत करना।

मुझे शायद आप जानते ही हैं। मुझे अब भाग छूटने में ही भलाई लगी क्योंकि कुम्भकर्ण को नींद आ रही थी। वह सोयेगा तो कब उठेगा, यह ईश्वर जाने। मैंने चुपचाप डायरी, पेन उठाया और वहां से भाग छूटा।

कार्तिक स्नान में हरि भणो रे भाई हरि भणो

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

वर्ष के बारह महीनों में कार्तिक का महीना ही ऐसा है जो बड़ा पवित्र समझा जाता है। यक्षों की पूजा का भी यही महीना है। इसी माह में नभचारी देव, ऋषि, सिद्ध, गंधर्व गंगा स्नान निमित्त आते हैं। साहसी नाविक भी विदेशों से इसी माह अपने घर लौटते थे। कृष्ण ने गीता में अपने को कार्तिक मास का रूप माना अत: यह माह स्नान-ध्यान तथा दीप-दान दोनों ही दृष्टियों से बड़ा पुण्यकारी और मंगलदायी है।

इस माह में दीप-दान की प्रथा बहुत प्राचीनकाल से है। यह दीप-दान वृक्षों तथा सरोवरों में किया जाता है। मन्दिरों में वृक्ष नहीं होने पर काठ के बड़े-बड़े स्तम्भ में चारों ओर लोहे की सलाकाएं लगाकर वृक्षाकृति बनाई जाती है और उस पर दीपक रख दिये जाते हैं। मन्दिरों के अतिरिक्त जहां-जहां वृक्ष होते हैं वहां डालियों पर ये दीपक ऐसे प्रकाशित होते हैं जैसे प्रकाश की बिम्बावलियां जगमगा रही हों। छोटे-छोटे हीर-कन फूट रहे हों अथवा कि शान्त स्निग्ध चिंगारियों से आभूषित वृक्ष का हर पत्ता-पत्ता अपनी मंगल मुस्कान बिखेर रहा हो। मृतात्माओं के प्रति श्रद्धा भाव के प्रतीक भी ये ही दीप हैं।

दीपावली की संध्या को बच्चे हीड़ को हीड़ाते हुए घर-घर जाते हैं और उसमें तेल डलवाते हैं। धर्मशास्त्रों में हीड़ जलाने के अलौकिक उदाहरण मिलते हैं। धर्मसिन्धु में उल्लेख आता है कि श्राद्धपक्ष में हमारे पूर्वज पृथ्वी पर आते हैं और वे इतने परितृप्त हो जाते हैं कि यहीं आराम की नींद सो जाते हैं। दीवाली पर यह हीड़ उन्हें जगाकर यथास्थान पहुंचाती है और राह दिखाती है। अंधेरे में इसके प्रकाश से मृतात्माएं अपने गंतव्य पहुंचती हैं और मार्ग का सुख लूटती हैं। इसी दिन काति नहाई औरतें नदी-सरोवर में जहाज-टाटी पर छत्तीस दीपक छोड़ती हैं। ये दीपक आटे के बने होते हैं। रात में सैंकड़ों की संख्या में छोड़े जाने वाले ये दीपक ऐसे लगते हैं

जैसे ऊपर का सारा आकाश उलट पानी में आ समाया हो और ये दीप तारे बन ज्योतित हो रहे हों।

आजकल माटी के दीपक अधिक छोड़े जाते हैं। एक-एक दीवला उस अंधेरे नीरव में जलता-चलता अपनी राह स्वयं खोजता हुआ न जाने कितने भूत और भविष्य को आलोकित करता हुआ प्रशस्त होता है। छोड़ा दीपक यदि तत्काल बुझ जाता है तो महिलाओं का कार्तिक मास खंडित हुआ समझा जाता है। कहीं न कहीं कोई त्रुटि हुई समझी जाती है और तब वह महिला बड़ी दुखी और प्रायश्चित करती हुई पाई जाती है। कितना महत्व है इन दीप-दानों का! स्नान, पूजा विधानों का! न जाने कितने अगले और पिछले जन्म इनके साथ जुड़े हुए हैं! सभी चाहते हैं कि उनके लिए कार्तिक मास टूठकारी हो, रूठकारी नहीं।

प्रात: बड़े सवेरे महिलाएं उठकर झुण्ड के झुण्ड रूप में काति नहाने के लिए निकल पड़ती हैं। 'पोड्या हरि ने जगाया ए बंसी क्यूं बाजी अधरात' तथा 'जागो हो म्हारा राय समंदर' जैसे गीतों की मधुर ठंडी स्वरलहरियों से सोये घाट, ताल, सरोवर जग पड़ते हैं। ठहरा हुआ पानी लहरा उठता है। महिलाएं पानी में डूबतीं-उठतीं गंगा-स्नान का पुण्य प्राप्त करती हैं। स्नान के बाद और स्नान के समय भी गीत शान्त नहीं होते हैं। गीत ही उनकी जीत है। गीत उन्हें जिलाये रखते हैं। नहलाये रखते हैं। पुण्याये रखते हैं। इन गीतों ने भक्ति और शक्ति की जो सौगात दी है उसका लेखा नहीं किया जा सकता।

सारे के सारे गीत सांवरिया के सम्बोधन हैं। महिलाएं नहा रही हैं जैसे राधा नहा रही हैं। वे अकेली नहीं हैं। उनके साथ राधा है। राधा के साथ कृष्ण हैं। सारी की सारी महिलाएं राधामय हैं। नहाकर सभी अपने साथ लाये कंकड़ की पूजा में लग जाती हैं। ये कंकड़ पथवारी हैं। पूज्य हैं। पथवारी की पूजा-आरती में जसोदा माता का स्मरण किया जाता है। नंदकंवर की आरती जसोदा मां के बिना पूरी कैसे हो सकती है-

सोना केरो दीवलो रूपा केरी वाट
सरवर करोजी सनान जसोदा ए मांय
थांने नंद कंवर की आरती

अर्थात् सोने का दीपक, चांदी की बाती, सरोवर स्नान करो यशोदा मां तुम्हारे नंदकंवर की आरती और आरती के बाद गीत प्रारम्भ होता है- 'हरि भणो रे भाई हरि भणो।' यह गीत सात बार गाया जाता है। कुछ कड़ावों को बदल-बदल कर गाया जाता है और यहीं प्रतिदिन कार्तिक की पांच-पांच कहानियां कही जाती हैं। ये सारी की सारी कहानियां आम जीवन की, घर-गृहस्थी की कहानियां हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

राजस्थानी रंग दर्शाती सबरंग पोथी

माणक तुलसीराम गौड़ राजस्थानी के चावे-ठावे लेखक हैं। इस भाषा में उन्होंने गद्य तथा पद्य में जो सृजन किया उससे उनका राजस्थानी के प्रति प्रेम, गहन लगाव, गूढ़ अध्ययन तथा साधनामूलक समर्पण लक्षित होता है। हिन्दी साहित्य में इस भाषा-साहित्य की ही यह देन रही जिससे उसका प्रारंभिक और मध्यकाल सशक्त, सबल, सम्पूर्ण तथा संश्लिष्ट बना है।

तुलसीराम गौड़ रचित 104 पृष्ठीय 'मैं हूं विरहण पीव री' पोथी दोहा-सोरठा छन्द में है। जन्मभूमि राजस्थान के अनेक रंगों का बखान करती यह कृति अपनी परम्पराओं को पुनर्नवा करती इठलाती है। यथा -

मुख बोल्यां मिश्री घुळै, और बढ़ै सनमान।
मिनख-मिनख में हेत है, वो है राजस्थान।।

मातृभूमि और मातृभाषा पर कवि बारम्बार लुळलुळ जाता है-

मायड़ भाषा आपणी, आ आपणी पिछाण।
बिन भासा गूंगो लगै, इणनै सांची जाण।। (पृ. 37)
मायड़ भाषा आपणी, नित उठ लेवो नांव।
जे भूलोळा मात नै, होवोळा गुमनांव।।
मायड़ भाषा आपणी, आ मनड़ै री मीत।
आ तो रग-रग में बसै, इणसूं जोड़ो प्रीत।।

कवि द्रष्टा होता है। अपनी दो आंख से वह अतीत, वर्तमान और भविष्य ; तीनों लोक देखता है। वह अतीतानुरागी ही नहीं, वर्तमान का वाही तथा भावी का भोक्ता होता है। समाज में व्याप्त विडम्बनाओं, विसंगतियों तथा वैमनस्य पर वह करारी चोट करने में जरा भी संकोच नहीं करता-

अै कैड़ी मजबूरियां, अै केड़ा है हाल।
बेटा अफसर सहर में, गांव बाप बेहाल।।
जिण दिन सूं मां कर दियो, घर बेटां रै नांव।
उण दिन सूं मां रो पड्यो, वृद्धाश्रम में पांव।।
नहीं किणी सूं दोस्ती, नहीं किणी सूं आस।
वै'ई निकळ्या दोगला, जिण पै कर्यो विसास।।

अतीत उसे आज भी सुहावना लगता है। उसकी याद उसे जीवन देती है-

बाळपणा री कहाणियां, अजै तलक है याद।
दादी म्हनै सुणावती, मैं देतो हो दाद।।

समय की बलिहारी से कवि भलीभांति परिचित है। बदलाव समय का तकाजा है पर करणीय-अकरणीय की सीख रखना भी उतना ही आवश्यक है-

ऊपरली मनवार, मनड़ै मांय हरख नहीं।
अैड़ां सूं व्यवहार, मती राखिजै श्यामला।।
हुवै कितो'ई हेत, बिन नूतै जाणो नहीं।
चाहे कितरो देत, मान घटै रै श्यामला।।
बैगी बुझसी लाय, जे लागै वा अगन सूं।
जीभां लागी लाय, नहीं बुझै रै श्यामला।।

दोहा-सोरठ जैसे छोटे छन्द में कवि ने बड़ी-बड़ी बातें कहकर राजस्थान की रंगारंग संस्कृति की साहित्य के माध्यम से जो परुसकारी की वह साहित्य की स्वाद-श्रीवृद्धि को शोभित करने वाली है। **-डॉ. तुक्तक भानावत**

85 कविताओं का पेड़

श्री राजकुमार जैन 'राजन' बालसाहित्य के श्रेष्ठ सुधर्मी रचनाकार ही नहीं, उसके उन्नयन, विकास एवं प्रचार-प्रसार के पुरोधा भी हैं। अपने देशव्यापी परिभ्रमण द्वारा उन्होंने इस क्षेत्र के लेखकों से भेंट कर न केवल बालसाहित्य को बढ़ावा दिया अपितु उसका प्रकाशन करते हुए शिक्षालयों में बच्चों के हाथों में निशुल्क वितरित भी किया है। विभिन्न भाषाओं में उसका अनुवाद कराया है। अनेक समारोह एवं संगोष्ठियां आयोजित की हैं और सोहनलाल द्विवेदी, डॉ. राष्ट्रबन्धु, डॉ. श्रीप्रसाद, बालशौरि रेड्डी जैसे शीर्षस्थ तथा श्रेष्ठतम बाल साहित्यकारों की स्मृति में उनके नाम से उम्दा पुरस्कार भी प्रारम्भ किये हैं। उनका यह कार्य निरन्तर गतिमान तथा गर्वोक्ति लिये है।

आदिवासी बालक से लेकर पशु-पक्षियों के गीत तक हिन्दी-राजस्थानी की उनकी लिखित अनेक पुस्तकें बाल-मन के कई रूपों को रूपायित करने में संस्कारित हुई हैं। पर-काया प्रवेश की तरह बाल-काया में प्रवेश कर राजन ने उनकी हर हलचल, हल्लागुल्ला, नटखट शरारत, रूठाई-मनाई, चाह-अनचाह, गान-तान, ग्राह्य-अनग्राह्य, ठुकाई-पिटाई, हंसी-रूदन, धमक-मूसल, धूल-फूल तथा चौर्य-शौर्य को तनस्थ-मनस्थ कर जो आत्मस्थ दिया है वह बालसाहित्य और साहित्य की उज्वल नख-शिख देती नयनाभिराम नक्काशी है।

'पेड़ लगाओ' पुस्तक में राजकुमार राजन लिखित 85 कविताएं हैं। सभी कविताएं सचित्र हैं। इन कविताओं का उद्देश्य बालकों को चराचर जगत के जीवों तथा उनके कार्यकलापों से परिचित कराने के साथ-साथ समसामयिक परिवेश की शिष्ट धर्मिता से रसास्वादन कराना भी है। यह इसलिए भी जरूरी है कि बच्चे इन्हीं सबके साथ सहचरी कर शिक्षित-दीक्षित हो अपना जीवन निर्मित करेंगे।

यही कारण है कि चींटी, हाथी, बिल्ली, कबूतर, गिलहरी, नदी, सूरज, मेंढक, शेर, लोमड़, आम, भालू, सपेरा, चूहा, नीम, पतंग से लेकर सर्दी, छाता, होली, स्कूल, दीवाली, पुस्तक जैसे विषयों से कविता की पगड़ी बंधाई हुई है। ये विषय बाल-कविताओं में नये नहीं हैं पर 'पेड़ लगाओ' में ये ही विषय नई चमक-दमक लिए हाजिर हुए हैं।

बस्ते का बोझ, होमवर्क का बोझ और ट्यूशन की बोझिलता के मारे आज का बच्चा हंसीठट्ठा, मनोविनोद, खेलकूद से मन बहलाव करना भूलता जा रहा है ऐसी स्थिति में वह रोबोट का स्मरण करता है-

रोबोट भैया घर में मेरे आओ ना।
बटन दबाते ही सारे प्रश्नों का हल कर जाओ ना।।
घंटों में जो सोच न पाते, तुम पल में कर जाते।
कितना तेज दिमाग तुम्हारा, बतलाओ क्या खाते।।
थकना नहीं स्वभाव तुम्हारा, बड़ों-बड़ों को दिया सहारा।।

यही नहीं, लंच में भी वह बदलाव चाहता है, कुछ लजीज और जायकेदार। इस प्रकार-

कोई इंग्लिश डिश रखदो, कुछ काजू किशमिश रखदो।
भेलपुरी, डोसा, इडली, थोड़ी सी गुड-विश रखदो।।
सेंडविच और नूडल हो, और कभी हों भूट्टे छोले।
मित्रों में भी रौब जमे, खा दिल बोले ओले-आले।।

सच तो यह अधिक है कि राजकुमार से जब-जब भी मेरी भेंट होती है, मुझे लगता है मैं एक बालक से ही मिल रहा हूं- सहज, आत्मीय और निरभिमानी। बड़ी साइज की 106 पृष्ठों की पक्की जिल्द और आकर्षक कवर लिए यह पुस्तक अयन प्रकाशन, 1/20, महरौली, नई दिल्ली-110030 से छपी है पर क्या कीमत 250/- अधिक नहीं है? **- म. भा**

अमरावती मंडल का दीवाली विशेषांक

अमरावती से प्रकाशित दैनिक हिन्दी अमरावती का दीपावली विशेषांक बड़ी मनभावन साज-सज्जा तथा साहित्य की विविध विधाओं से युक्त रचनाओं से लकदक विशेष पठनीय है। सम्पादक अनिल अग्रवाल ने अपने सम्पादकीय में साहित्य, पाठक, सम्वाद और सहिष्णुता के मुद्दे पर अपनी बेबाक टिप्पणी में यह ठीक ही लिखा-

'इन दिनों लगातार आपाधापी वाले जीवन व तेज रफ्तार होती जिन्दगी में सर्वाधिक नुकसान साहित्य क्षेत्र का हुआ है। वाचन संस्कृति का धीरे-धीरे ह्रास हो रहा है। वाचन के प्रति रूचि रखने वाले पाठकों की यह शिकायत है कि पहले की तरह बेहतरीन व उम्दा साहित्य पढ़ने को नहीं मिलता। साहित्य क्षेत्र की अलग-अलग विधाओं में महारत हासिल रखने वाले लेखकों व कवियों का मानना है कि उनके साहित्य को बेहतरीन पाठक नहीं मिलते। कहीं न कहीं पाठकों व लेखकों के बीच सम्वादहीनता का शून्य बन गया है। यह स्थिति अपनेआप में एक अंधेरा ही है। पश्चिम विदर्भ जैसे देश के पिछड़े हिस्से से प्रकाशित होने वाले हिन्दी दैनिक 'अमरावती मण्डल' द्वारा विगत कई वर्षों से रामसेतु की गिलहरी की तरह अपने स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं।' विशेषांक में कहानी, लेख, व्यंग्य, लघुकथा, कविता तथा यात्रा वृतांतपरक अच्छी सामग्री संजोई गई है। एक दर्जन कहानियों में सूर्यकान्त नागर की नास्तिक, प्रमोद भार्गव की घुसपैठिये रोहिंग्या, आशा पाण्डे की मेमने की चीख, सोनाली करमरकर की जन्मदिन का तोहफा छुवन देती लगती हैं।

बाईस आलेखों में डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित नन्हा सा दीपक अनंत किरणों का सूरज, विष्णु भट्ट का राम से बड़ा राम का नाम, डॉ. प्रभा दीक्षित का भाषा के भूमण्डलीकरण जैसे लेख तसल्ली देने वाले हैं।

सत्रह व्यंग्यों में पूरण शर्मा का हिन्दी लेखक प्रा. लि., कृष्णा अग्निहोत्री का तोर जवानी सलामत रहे, हरमन चौहान का पड़ना बीमार भेड़ का, यशवन्त कोठारी का लक्ष्मी बनाम गृहलक्ष्मी व्यंग्य मिश्रित हास्य की पैनी धार लिये हैं। चंवालीस कविताओं के कवियों में महेन्द्र भाटिया, डॉ. जगदीशचन्द्र शर्मा, चन्द्रसेन विराट, प्रदीप नवीन, भागवत दुबे, माधुरी राऊलकर की कविताएं अच्छा दाब लिये हैं। विशेषांक का कवर चित्र आकर्षक, सामयिक और सार्थक समझ का सुयोग है। **- डॉ. कहानी भानावत**

जार सदस्यों का दो लाख का दुर्घटना बीमा

उदयपुर। जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) उदयपुर इकाई के सभी सदस्यों का युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड की ओर से दो लाख का दुर्घटना बीमा करवाया गया है। सोमवार को एक सादे कार्यक्रम में हिम्मतसिंह चौहान ने जार सलाहकार सुमित गोयल को पोलीसी भेंट की।

जार जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि सभी सदस्यों का दो लाख रुपए तक का दुर्घटना बीमा करवाया गया है। इसके अंतर्गत सड़क एक्सीडेंट, गिरना, सर्पदंश, इलेक्ट्रिक शॉक आदि तरह की दुर्घटनाएं शामिल हैं। साथ ही हमेशा के लिए आंशिक अंगभंग के तहत भी 2 लाख रुपए तक की आर्थिक सहायता का प्रवधान है। प्रारंभ में बीमा की अवधि एक वर्ष की है। इस बीमे के भामाशाह हंसा माइनिंग कंपनी प्राइवेट लिमिटेड के हिम्मतसिंह चौहान ने बताया कि पत्रकार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के प्रहरी हैं तथा वे खबरों के लिए दिन-रात फील्ड में संलग्न रहते हैं। इस दौरान कई बार जोखिम भरी स्थितियों में भी सही खबर पाठकों व दर्शकों तक पहुंचाते हैं। ऐसे में उनके लिए इस प्रकार का बीमा बहुत उपयोगी है। इस अवसर पर अजयकुमार आचार्य, विपिन गांधी, अल्पेश लोढ़ा, पवन खाब्या, राजेन्द्रकुमार पालीवाल, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, राजेन्द्र हिलोरिया भी उपस्थित थे।

24 जून 1997 को उदयपुर में राजस्थान साहित्य अकादमी के एक समारोह में प्रख्यात आलोचक डॉ. नामवरसिंह के व्याख्यान के बाद डॉ. महेन्द्र भानावत ने उनसे भेंट कर मीरां विषयक अपने द्वारा किये गये शोधान्वेषण की जानकारी दी। 'निर्भय मीरां' तथा अन्य प्रकाशन भी भेंट किये। इस अवसर पर डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना, राजेन्द्र सक्सेना, किशन दाधीच तथा माणिक आर्य मौजूद थे।

उदयपुर मीडिया अवार्ड-2018 का रंगारंग आयोजन

उदयपुर। रविवार शाम को भैरव बाग में उदयपुर मीडिया अवार्ड-2018 का रंगारंग आयोजन किया गया। अवार्ड समारोह में मीडिया जगत के 200 से अधिक मीडियाकर्मी एवं उनके परिजनों ने उत्साह से भाग लिया। यह कार्यक्रम लेकसिटी प्रेस क्लब, जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) एवं प्रोम्पट इंफ्राक्रोम के तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम में 20 से अधिक पत्रकारों एवं 10 अन्य मीडिया जगत से जुड़े महानुभावों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अरावली हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. आनंद गुप्ता, विशिष्टि अतिथि प्रोम्पट इंफ्राक्रोम के तबरेज अली तथा बीएनआई के आयुष चौधरी एवं गुड डॉट के दीपक परिहार थे।

स्वागत भाषण में लेकसिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष रफीक एम. पठान ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मीडियाकर्मियों की महत्ती भूमिका पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि डॉ. आनंद गुप्ता ने आशा व्यक्त की कि मीडियाकर्मी जनता के समक्ष सच को रखेंगे और लोकतंत्र के तीनों स्तंभों को समय-समय पर जागरूक करने का प्रयास करते रहेंगे। बीएनआई के आयुष चौधरी एवं गुड डॉट के दीपक परिहार ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

समारोह में प्रात:काल के संपादक सुरेश गोयल को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। इस अवसर पर लेकसिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष रफीक एम पठान एवं जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत के साथ संजय खाब्या, शैलेष व्यास, प्रदीप मोगरा, डॉ. सुधा कावड़िया, डॉ. रवि शर्मा, कपिल श्रीमाली, छोगालाल भोई, अनुप पराशर, मनु राव, भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, अजय आचार्य, भूपेश दाधीच, ओमप्रकाश पूर्बिया, प्रतापसिंह राठौड़, कुलदीपसिंह गहलोत, भगवान प्रजापत, अब्दुल लतीफ, रामसिंह चदाणा, गौरीकांत शर्मा, विकास बोकड़िया, ऋषभ जैन को भी सम्मानित किया गया। इसी प्रकार विज्ञापन एजेंसियों में बीएन हरलालका को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। अन्य सम्मानितों में हीरालाल रावत, हर्षमित्र सरूपरिया, संदीप खमेसरा, दीपक रावत, हितेष जोशी, मुकेश मूंदड़ा थे। संचालन शकुंतला सरूपरिया जबकि धन्यवाद अल्पेश लोढ़ा ने दिया।

कानोड़ मित्र मंडल का स्नेह मिलन

उदयपुर में निवासरत कानोड़ निवासियों का मैत्री संगठन कानोड़ मित्र मंडल की रजिस्ट्रेशन तिथि सन् 1990 है। दरअसल यह इसके नांगल का दिन है। नींव का मुहूर्त तो सच पूछा जाय तो कानोड़ में ही 06 जून 1956 को साहित्य परिषद के रूप में हो चुका था जिसका उद्घाटन पं. उदय जैन ने किया।

इसके साथ ही एक भव्य कविसम्मेलन आयोजित किया गया और फिर हस्तलिखित पत्रिका 'ज्वार' का दीवाली अंक और दूसरे वर्ष 1957 में गणतंत्र दिवस विशेषांक निकाला जो मेरे संग्रह की शोभा बना हुआ है। सन् 1958 में बी. ए. की पढ़ाई कर मैं उदयपुर आ गया। तब से यहीं हूं। कुछ मित्र यहां थे जिनसे लगातार मिलना होता। उन्हीं के साथ एक साहित्यिक संस्था खोलने का विचार बना और कानोड़ मित्र मंडल अस्तित्व में आया। तबके साथियों में डॉ. कनक ऊदावत, श्रीचंद डूंगरवाल, सोहन धींग, रवीन्द्र पोखरना तथा भैरू भानावत थे।

बाद में यह कांरवां बढ़ता रहा। इसका प्रभाव यह रहा कि जयपुर में डॉ. डूंगरसिंह पोखरना और चित्तौड़ में डॉ. कनक ऊदावत ने कानोड़ मित्र मंडल बनाये जिनके समारोह का मैं भी प्रत्यक्षदर्शी बना। बाद में उदयपुर में मित्र मण्डल की देखादेखी बड़ीसादड़ी, बंबोरा, भींडर, देलवाड़ा निवासियों ने मित्र मंडल प्रारंभ किये। ये विचार डॉ. महेन्द्र भानावत ने कानोड़ मित्र के 18 नवंबर 2018 को दीवाली स्नेहमिलन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

इस अवसर पर पूर्व सेशन जज सुन्दरलाल मेहता ने मित्र मंडल की नव निर्वाचित कार्यकारिणी के अध्यक्ष पूर्व न्यायाधीश हिमांशु नागोरी, उपाध्यक्ष द्वय जीवन पोखरना एवं कोमल वया, महामंत्री दिलीप भानावत, कोषाध्यक्ष तखतसिंह भाणावत, सहसचिव संजय अलावत तथा सांस्कृतिक सचिव अनिल पुरोहित को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

इसी क्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय अवदान बाबत डॉ. नरेन्द्र धींग, धर्मचंद नागोरी, सोहन भानावत, डॉ. कनक ऊदावत, मानमल कुदाल, डॉ. भरत अलावत, सुन्दरलाल जैन, सुन्दर अलावत, डॉ. कनकप्रसाद व्यास तथा करणमल भाणावत को सम्मानित किया गया।

डॉ. भानावत ने सुझाव दिया कि मित्र मण्डल का अभिनव स्थापत्यकलामुक्त अपना निजी भवन हो। उसमें एक उम्दा वाचनालय और समृद्ध पुस्तकालय हो। बालकों की सृजन-शक्ति को बढ़ावा देने हेतु बालसाहित्यपरक लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन हो। प्रतिभा प्रोत्साहन के लिए विविध प्रतियोगिताएं और सम्मानसूचक आयोजन हों। सदस्यता अभियान में कानोड़वासी पुरुष वर्ग ही नहीं, महिला शक्ति को भी समान अधिकार और भागीदारी मिले। त्रैमासिक बुलेटीन और वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन हो। छात्रों के उच्च अध्ययनार्थ कोचिंग आदि की समुचित व्यवस्था हो। प्रवासी कानोड़वासियों के नियमित सम्मेलन हों और कानोड़ के विकास के विभिन्न आयामों पर भी हमारा सिलसिलेवार दृष्टिकोण हो। उन्होंने सोहन भानावत द्वारा प्रकाशित पब्लिक पड़ताल और डॉ. तुक्तक भानावत के शब्द रंजन पाक्षिक का जिक्र भी किया।

इस अवसर पर डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत तथा धर्मचन्द नागोरी ने भी वैचारिक भूमिका दी।

समारोह में विशिष्ट अतिथि कानोड़ में संचालित तुलसी अमृत संस्थान के संस्थापक शांतिचन्द्र बाबेल तथा समाजसेवी करणमल कोठारी ने अपने संबोधन में भारतीय परिवेश में कानोड़ की देन को रेखांकित किया। अध्यक्ष हिमांशु नागोरी तथा महामंत्री दिलीप ने मित्र मंडल की भावी रूपांकर योजना पर प्रकाश डाला। अच्छी खासी उपस्थिति के बीच यह समारोह सबरंग सबरस सिद्ध हुआ। **- दिलीप भानावत**

सम्मान

उज्जैन के युवा रचनाकार मासिक शाश्वत सृजन के सम्पादक सन्दीप सृजन ने शब्द रंजन कार्यालय में डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की। उनके साथ बालसाहित्य के सुधी लेखक राजकुमार जैन 'राजन' थे। सन्दीप सृजन को यहां युगधारा द्वारा आयोजित समारोह में उमरावदेवी धींग पुरस्कार प्रदान किया गया। डॉ. दिलीप धींग ने बताया कि इसी समारोह में हिन्दी-राजस्थानी लेखिका डॉ. करूणा दशोरा को कन्हैयालाल धींग साहित्य सृजन पुरस्कार से नवाजा गया।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 दिसंबर 2018

सम्पादकीय

जनपदीय बोलियों का महत्व

कोई भाषा हो, वह बोलियों से संवरती है। प्रारम्भ में यही भाव प्रमुख था पर धीरे-धीरे हमने बोलियों से किनारा करना शुरू कर दिया तो भाषा के लाले पड़ गये। हम भाषा को भी सुरक्षित नहीं कर पाये और न उसका कोई स्वरूप ही दे पाये। राजस्थान में राजस्थानी भाषा की मान्यता के फोड़े पड़े हुए हैं। आधी सदी से ऊपर हो गया, हम अभी तक इस बाबत् पड़ा झमेला साफ नहीं कर पाये।

इसे बारीकी से समझना होगा। यह ध्यान रखना होगा कि हमारा बहुजन भाषा में नहीं जीकर बोलियों में जी रहा है। वह जो बोल रहा है, जो कुछ कर रहा है और जिन जीवनधर्मी संस्कारों में वह संस्कारित हो रहा है उसके पीछे उसकी बोली है, भाषा नहीं। जब बोलियां पुष्ट होंगी तो ही भाषा का थाला भरेगा। बोलियां भाषा को पूर्ण, सार्थक तथा समझवान बनाती हैं।

इसके लिए वासुदेव शरण अग्रवाल का यह कथन उल्लेखनीय है जब उन्होंने कहा कि जनपदीय बोलियां साक्षात् कामधेनु समान हैं। प्राकृत और अपभ्रंश भाषा के अनेक धत्वादेशों की धात्री जनपदों की बोलियां हैं। बोलियों में शब्दों के उच्चारण और रूप जाने बिना शब्द की व्युत्पत्ति का पूरा पेटा नहीं भरा जा सकता। सर्वप्रथम आवश्यकता जनपदीय बोलियों के कोषों के निर्माण की है। शब्द नामक ज्योति के प्रकाश में जीवन के अंधेरे कोठों को प्रकाश से भर देना है। भौतिक वस्तुओं एवं मनोभावों को व्यक्त करने के लिए ठीक शब्दावली का टोटा मिट जायेगा।

जनपदों के साथ मिलकर हमारी भाषा की अनेक धातुएं, मुहावरे और कहावतों का अद्‌भुत भण्डार प्राप्त होगा। कहावतें हमारी जातीय बुद्धिमत्ता के समुचित सूत्र हैं। शब्दावलियों के निरीक्षण और अनुभव के बाद जीवन के विविध व्यवहारों में हम जिस संतुलित स्थिति तक पहुंचते हैं, लोकोक्ति उसका संक्षिप्त सत्यात्मक परिचय हमें देती है।

उनका यह कथन आज के संदर्भ में और अधिक महत्वपूर्ण तथा सामयिक लगता है जब वे कहते हैं- प्रत्येक जनपदीय क्षेत्र से कई-कई सहस्त्र कहावतें मिलने की सम्भावना है। उनका उचित प्रकाशन और सम्पादन हिन्दी साहित्य की अनमोल वस्तु होगी। यह भी नियम होना चाहिये कि जनपदीय शालाओं में पढ़ाई जाने वाली पोथियों में स्थानीय सैंकड़ों कहावतों का प्रयोग किया जाय। दशम श्रेणी तक पहुंचते-पहुंचते विद्यार्थी को अपनी एक सहस्त्र लोकोक्तियों का अर्थ सहित अच्छा ज्ञान करा देना चाहिये।

कहना नहीं होगा कि किसी राष्ट्र की पहचान उसकी अपनी निज की संस्कृति की पहचान से है। भारत में ही नहीं, पूरे विश्व में भारतीयता की पहचान उसकी अपनी बोली और उससे अगेलगे सांस्कृतिक समवायों से है। बोलियां संस्कृति की परतों को खोलकर उन्हें अर्थवत्ता प्रदान करती हैं और आंखों में तेजी लाकर प्रकाश देती हैं। यही प्रकाश हमारे सांस्कृतिक क्यारों को धोरा देता प्राणवान किये रहता है।

स्मृतियों के शिखर : संस्मरण विधा का ऐतिहासिक दस्तावेज

-डॉ. शरद पगारे-

शब्द रंजन में डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित लोकप्रिय स्तंभ 'स्मृतियों के शिखर' संस्मरण साहित्य की महत्वपूर्ण विधा के रूप में स्थापित हो गया है। इसके जरिये संस्मरण-लेखक के सम्पर्क में आए विभिन्न क्षेत्रों में साहित्यिक सांस्कृतिक कलात्मक योगदान देने वाले सर्जकों के ऐतिहासिक योगदान का स्मृति लेखा ही नहीं करते, उनकी अंगुली पकड़ संस्मरणों के जरिये उनका पुनर्सृजन कर पाठकों को परिचित कराते हैं जिनसे वे अपरिचित एवं अनभिज्ञ हैं। यह भगीरथ कार्य कर महेन्द्र भाई ऐतिहासिक कार्य कर रहे हैं।

01 नवम्बर 2018 के अंक में विश्व प्रसिद्ध लोकगायिका नारायणीदेवी की लोकगायन साधना का जो शब्द-चित्र प्रस्तुत किया वह अविस्मरणीय है।

देवीलालजी सामर ने ग्रामीण अंचलों में चुपचाप कला-साधना में रत तपस्वियों की खोज कर उन्हें कला मण्डल से जोड़ा। उनकी कला को तराशा और उसमें सौंदर्य भरा। यह काम कला-प्रेमी मर्मज्ञ महेन्द्र भाई के जरिये किया। महेन्द्र भाई भाग्यवान थे कि खोज के जरिये उनका कलाविदों से सीधा ही नहीं, पारिवारिक सम्बन्ध जुड़ा। इस गुण-ग्राहक ने गुणियों को लोककला मण्डल का मंच प्रदान कर भारतीय सांस्कृतिक विरासत से दुनिया को परिचित कराया। ये अनमोल हीरे, माणिक, मुक्ता सदैव के लिए उनके अपने हो गए।

नारायणीदेवी ही नहीं, कला-साधिका अभिमंच के जरिये पात्र-काया में प्रवेश कर कुशल अभिनेत्री शकुन्तला पंवार जुड़ीं जिन्होंने अपने नृत्य-कौशल द्वारा कला को प्रणम्य बनाया। पहले यह कार्य शकुन्तलाजी ने कला मण्डल के माध्यम से किया।

सामरजी के बाद कला-तपस्या को निरन्तर रखने के लिए उन्होंने शाकुन्तलम संस्थान की स्थापना कर नवोदित कलाकारों को प्रशिक्षित करना शुरू किया। इस हेतु वे वर्कशॉप भी स्थान-स्थान पर आयोजित करती हैं।

श्रेष्ठ कलाविदनी के रूप में शकुन्तलाजी कला के उन्नयन में अपना तन, मन और धन समर्पित किये हैं। उनकी शिष्या बालिका हीर ने 29 अक्टूबर 2018 को उदयपुर नगर निगम द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सैंकड़ों दर्शकों के बीच वाहवाही ली। बकौल महेन्द्र भाई के शब्दों में -''गुड़िया हीर ने जो भवाई नृत्य प्रस्तुत किया, दर्शकों को दांतों तले जीभ दबाने को मजबूर कर दिया। हीर की भवाई कला के जादू ने दर्शकों के दिल-दिमाग में सदा के लिए अमिट जगह बना ली जिसका श्रेय कलागुरु शकुन्तलाजी को है।''

मैं महेन्द्र भाई के पूर्व प्रकाशित 61 स्मृतियों के शिखिर लेखों का भी प्रशंसक रहा हूं। शब्द रंजन के मिलते ही सबसे पहले यही स्तंभ पढ़ता हूं। इन लेखों की बात ही और है। उनमें घोर गरीबी की विपन्नता में जीते हुए भी लोक-कलाकारों की लोकचेतना की रसीली मिठास मिलती है। महेन्द्र भाई ने नारायणीदेवी के रससिक्त गीतों में रोमांस का शहद घोल दिया है। उनके दो रोमांटिक गीतों -'सैंया तोरी गोदी में गेंदा बन जाऊंगी' तथा 'तरकारी ले लो मैं हूं मालनिया बीकानेर की' के जरिये रोमांस का जो तड़का लगाया है वह मन-प्राण को आल्हादित कर देता है। कठपुतलियों के माध्यम से नारायणीदेवी ने जो रोमांटिकता का सृजन किया है वह रोमांस विभोर करने को पर्याप्त है।

इसी स्तंभ में महेन्द्र भाई ने अभिनय की सम्राज्ञी शकुन्तलाजी की मानवीय श्रेष्ठता का परिचय भी प्रस्तुत किया। शकुन्तलाजी अपने अभिनय की सफलता का श्रेय नारायणीदेवी के पार्श्व गायन को देती है। इसने मुझे गहरे तक प्रभावित किया। मैंने तत्काल महेन्द्र भाई को फोन लगाया।

'महेन्द्र भाई आपने 62वें स्मृतियों के शिखर में लोकगायिका कोकिलकंठी नारायणीदेवी और विशेषकर अभिनेत्री शकुन्तलाजी की उदारता का जिक्र दिया है वह अद्‌भुत है।' 'शकुन्तलाजी यहां बैठी हैं। बात करना चाहेंगे?' 'यह मेरा सौभाग्य होगा।' 'खम्मा हुकुम।' 'ना.... ना.... खम्मा की जरूरत नहीं है।'

'इस राजस्थानी शिष्टाचार ने मुझे अभिभूत कर दिया।' 'आप सच्ची कलाकार तो हैं ही मानवीय सद्‌गुणों से भी भरपूर हैं।' 'धन्यवाद खम्मा हुकुम।'

'आपने विदेशों में प्रस्तुत अपने अभिनय से प्रशंसकों की प्रशंसा हांसिल की और उसके श्रेय की अधिकारी नारायणीदेवी को बताया। ऐसा कम ही होता है।' 'खम्मा हुकुम। सच्चाई ये ही है।'

'शकुंतलाजी! सामान्यतया दूसरे की सहायता से प्राप्त सफलता का श्रेय व्यक्ति स्वयं अपने को देना है।' 'खम्मा हुकुम! ये तो आप सही बोल्या।'

'परन्तु आपने नारायणीजी की सहायता को मान्य ही नहीं किया उन्हें श्रेय भी दिया। आप कला के उन्नयन के लिए भी वर्कशॉप करती हैं। शाकुंतलम के जरिये यह साबित करना है कि आप सच्ची कलाविद हैं।'

कुशल अभिनेत्री होने से बतियाने की उनकी शैली में एक रसीला माधुर्य है। किस शब्द को कैसा उच्चरित करना, शब्दों के बीच कितना कैसा पोज देना उनकी सफल अभिनय यात्रा का परिचायक है।

इसी लेख में महेन्द्र भाई के शब्द संयोजन ने जो रस निष्पत्ति की वह द्रष्टव्य है। वे लिखते हैं-

'राजस्थानी लोकगीतों के सहारे न जाने कितनी उजाड़ और उलझी बस्तियों का जीवन खरबूजी-तरबूजी (रसमय) हुआ। छाती पर विरह शिला के गुरुतर भार को लेकर न जाने कितनी विरहिणियों ने कुरजां, तोते, मोर बगुले, कौए, तीतर, हंस, पपीहे और फुदकती चिड़ियों ने अटावन दे तिल-तिल संदेश पहुंचाये हैं। नवोढ़ा वधुओं ने यौवन की देहरी में प्रवेश पाते हुए अंगड़ाइयों की लेखनी से न जाने कितनी रितु-पातियां लिखी हैं। युवतियों ने न जाने कितनी बार उन्हें अपने कंलकंठों पर गाकर 'सरस राग रति रंग' की पिचकारियां छोड़ी हैं तो वृद्धाओं ने न जाने कितनी बार उन्हें अपने बैठे गालों और गढ़ी आंखों में लाकर झुर्रियों का इतिहास देखा है।'

इसमें कोई संदेह नहीं प्रात: स्मरणीया पुण्यश्लोका संत-भक्त राजस्थान की मीरां के बाद कलामण्डल की कलानेत्रियों, कलाविदों, नारायणी सी कोकिलकंठी गायिकाओं, महाकवि कालिदास की देवीय-सौंदर्य की महानायिका के बाद राजस्थानी रूपसी अभिनेत्री शकुंतला ने अपने अभिनय द्वारा पात्र-काया प्रवेश कर उसे जीवंत किया और सच्ची कला पारखी होने का ऐतिहासिक परिचय दिया है, वे प्रणय हैं।

टैफे और इसेकि में अनुबंध

उदयपुर। विश्व की तीसरी सबसे बड़ी ट्रैक्टर निर्माता कंपनी ट्रैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लि. (टैफे) और इसेकि एंड कंपनी लि. ने भारत में कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर के निर्माण के लिए अनुबंध किया है। इसेकि एंड कंपनी लि. कृषि मशीनरी बनाने वाली जापान की तीसरी सबसे बड़ी कंपनी है, जो ट्रैक्टर, कृषि उपकरण, रोपण और कटाई मशीनरी, और इंजनों का निर्माण करती है। समझौते के अंतर्गत, इसेकि भारतीय बाजार के लिए इन उत्पादों के निर्माण हेतु टैफे को प्रॉडक्ट टेक्नोलॉजी प्रदान करेगा। इसके अलावा, समझौते के दायरे में टैफे के माध्यम से कम्पोनेंटध्असेंबली की सोर्सिंग सम्मिलितहै, जो टैफे द्वारा दिये जाने वाली संख्या पर लाभ देगी।

मल्लिका श्रीनिवासन, चेयरमैन और सी.ई.ओ. टैफे ने कहा कि यह समझौता भारतीय ग्राहकों को अंतर्राष्ट्रीय प्रॉडक्ट रेंज उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वैश्विक स्तर पर लाइट यूटिलिटी कॉम्पैक्ट ट्रैक्टर सेगमेंट में इसेकि के समृद्ध अनुभव, और भारतीय बाजार में अपनी मजबूत मैन्युफैक्करिंग क्षमता और मजबूत सप्लाई चेन रखने वाले टैफे की ताकत को साथ लायेगा, जो अद्वितीय मूल्य आधारित सम्रझ के माध्यम से नये, उभरते हुए अनुप्रयोगों के दौर में उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

शेखावतजी का पुस्तकीय प्रेम

राजनीति में शतरंज के पाये बिछाने और बिखेरने में माहिर दलपत सुराणा साहित्य तथा कला क्षेत्र के भी अनुरागी हैं। मैं शुद्ध साहित्य और वह भी लोकसाहित्य का व्यक्ति हूं इसलिए जब सुराणाजी ने फोन किया कि उनके घर पर उपराष्ट्रपति भैरोंसिंहजी शेखावत ने मुझे याद किया है तो मैं विस्मय में पड़ गया और चकित भी हुआ। सुराणाजी के घर जाने में मुझे कोई संकोच नहीं लेकिन खाली हाथ जाना भी मुनासिब नहीं लग रहा था सो जितनी अपनी लिखी पुस्तकें ले जाना चाहता था, ले गया।

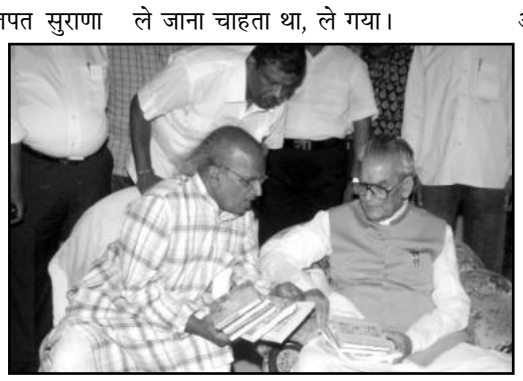

मुझे बहुत अच्छा लगा कि इतने बड़े राजपुरुष होकर भी अपने बहुत नजदीकी कुर्सी पर बिठाकर उन्होंने बड़ी आत्मीयता से मेरे साहित्य को देखा और अपने विचारों से अवगत किया। मैं तो सोच रहा था कि राजनीति में अपनी प्रखरता दिखाने वाले व्यक्ति अन्त में भी उसी में अंगूर से दाख बने रहते हैं पर शेखावतजी से बहुत कुछ वह सुनने को मिला जिसकी उम्मीद नहीं थी।

लेकिन आज भी जब कभी कोई प्रसंग आता है, मैं उस सोच में पड़ जाता हूं कि मुझे याद करने के पीछे उनकी क्या मंशा थी। सुराणाजी ने भी मुझे कभी कोई संकेत नहीं दिया कि वह क्या प्रयोजन था जिसके लिए उन्होंने मुझे फोन कर शेखावतजी से भेंट कराई।

स्मृतियों के शिखर (64) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रेल में रेकार्डिंग और बही खोलते बणजारे

भारतीय लोककला मण्डल में रहते कई तरह की लोकसमृद्ध जानकारियों से राजस्थान के लोकरंगों की अथाह जानकारियां प्राप्त हुईं। यह जानकारी जहां मधुमक्खियों के छत्तों में हाथ डालने जैसी रही तो कई बार भ्रमवश हमारी धुनाई भी खासी हुई। वाहन खराबी से अंधेरे डरावने वनखंड में माथे पर अपना सामान लादे लम्बे सफर की यातना से पांवों में फफोले भी पाले तो रेल की सफर में यात्रा करते हमसफर यात्रियों से बतियाते ऐसी अकूत जानकारी भी मिली जैसे सपने से अचानचक किसी खंडहर में गड़े धन के खजाने की प्राप्ति कर अतूत धनराशि का सुखानंद मिलता है।

ऐसी ही एक यात्रा 19 से 29 मार्च 1979 की रही। राणावास से उदयपुर की रेल यात्रा में बणजारा दल के आठ यात्रियों के साथ आपसी रामासामी करते ऐसी नजदीकी हो गई कि उन्होंने अपनी जानकारी का पिटारा ही खोल दिया। हमारे पास रेकार्डिंग मशीन थी। वे जो कुछ बोलते, हम उन्हें सुनाते। उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब पहली बार उन्होंने वह मशीन देखी और अपनी हू-ब-हू आवाज सुनी। यह पहला अवसर था जब रेकार्डिंग मशीन शकुनी बनी अन्यथा तो बड़े फोड़े ही पड़े जब लोग अपनी आवाज के कैद होने पर बुरी तरह झल्लाये और हम भी कम बुरे नहीं बने।

रेल यात्रियों में से एक छोगालाल (50) माण्डलगढ़ तहसील की ऊंदरखेड़ा पंचायत के गांव नयाबांस का था। उसने बताया कि उनमें लाली लछिया नाम की प्रेमकथा बड़ी प्रसिद्ध है। लछिया बड़ी हिम्मतवाली, ताकतवर और कलाबाज महिला थी जिसने मटके के कच्चे सूत का तागा बांध कुए से पानी निकाला। गावणी है-

बैठी-बैठी कांई करे लाली ए लाछिया गवारड़ी
कठे पड़ियो लोठियो डोर नै कस्या सरवर सींचे
नीर ए काचा सूत सूं

लाली लछिया के अतिरिक्त रायमल गूजर की बात भी इनमें प्रचलित है जिसे तेजाजी की तरह गाई जाती है। गायकी के साथ-साथ इसे अरथाई भी जाती है। ढोलाकंवर (ढोला मारू) की कथा भी इनमें प्रचलित है। ब्यावर के पास खरवा में भाद्रसुदी एकम को इनका मेला भरता है। इनके अन्य मेले कातिवदी पांचम तथा चेत सुदी एकम को भरते हैं। इन मेलों में बणजारे काफी मात्रा में एकत्र होते हैं। इनमें बणजारे मिलकर रात-रातभर मुरड़त माना गुंवारिया गाते हैं। इसके साथ-साथ ये लोग रमत करते हैं यानी नाना स्वांग भी प्रदर्शित करते हैं। वाद्यों में ढोलक तथा बांकिया बजाया जाता है। इन मेलों में खासतौर से बैलों का व्यापार किया जाता है।

बणजारे अपने कानों में तीन लटकने वाले झेले पहनते हैं जो गोखरू झेले कहलाते हैं। लखी नाम का एक बणजारा था जो एक लाख पोटी (बैल) से व्यापार करता था। वह जहां भी ठहरता, नई बावड़ी खुदवाता और उसका पानी पीता। उसकी मौत हीरा मीणा द्वारा हुई थी इसीलिए गवरी में इसका स्वांग लाया जाता है जहां हीरा उसे मार गिराता है। इस कारण गवरी से बणजारों को चिढ़ लगी हुई है। देखने पर खून खौलता है और आपस में मरने-मारने को उतारु हो जाते हैं।

सरदारगढ़ के निकट बुधपुरा गांव के दलजी हजारी ने बताया कि उनमें रूपा नाम का बणजारा बड़ा नामी हुआ जो लोकदेवता के रूप में पूजित है। रूपा के नाम की बड़ी करारी सौगन्ध चलती है। पहले बणजारे लोग कमर में बंधा तथा दाढ़ी साफे को बांधते थे। एकबार रूपा दुश्मनों से घेर लिया गया और उसे कमरबंधा खोलने को कहा। रूपा को बाध्य होना पड़ा पर कहते हैं ज्योंही उसने कमर से बंधा खोला कि उसका स्वांस जाता रहा तब से बणजारे कमर बांधकर न तो राम-राम करते हैं, न जात में बैठते हैं और न अपना साफा (ढांटो) दाढ़ी बांधते हैं। रूपा के नाम के साथ दारू की छांट पड़ती है।

लड़ाई में लट्ठ पर लट्ठ, वार पर वार चल रहे हों पर इस बीच यदि किसी ने रूपा की सौगन्ध दिला दी तो लड़ना बंद कर देंगे। लड़ाई में यदि कोई रूपा के नाम का साफा लम्बा डाल दे तो भी ये अपनी लड़ाई बंद कर देंगे। रूपा के सदैव मीठी चीज चढ़ाई जाती है। रूपा के साथ हंजू नामक गूजर रहता था जो रूपा की ही तरह पराक्रमी था।

बणजारों में साढ़ा बारह जात होती है। गौड़, गरासिया, नाड़ावत, दायमा, वैस, खीची, कछावा, सूरावत, राठौड़, बगाड़ा, चवाण तथा वनवाड्या। इन बारह जातों के अलावा आधी जात कमीण (ढोली) की होती है।

छोगाजी ने बताया कि परिवार में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो उसकी पूरी मानता रखते हैं। वह घर के किसी सदस्य के शरीर में आता है और उसके कहे अनुसार उसकी पूजा-प्रतिष्ठा करनी पड़ती है। यदि इस कार्य में कोई त्रुटि रह जाती है तो वह अनिष्ट कर देता है। भारी बीमारी दे देता है और यहां तक कि जीना भी मुश्किल कर देता है। पत्थर की प्रतिमा के रूप में भी ये लोग अपने घरों में पूरवज को थरपित करते हैं। गले में भी ये लोग पूरवज की मूरत बान्धते हैं जिसे बेवत कहते हैं। कालका, चांवड़ा, रेबारी, भेरू, माताजी आदि देवी-देवता इनकी जाति में पूज्य हैं।

बणजारे अपने कानों में तीन लटकने वाले झेले पहनते हैं जो गोखरू झेले कहलाते हैं। लखी नाम का एक बणजारा था जो एक लाख पोटी (बैल) से व्यापार करता था। वह जहां भी ठहरता, नई बावड़ी खुदवाता और उसका पानी पीता। उसकी मौत हीरा मीणा द्वारा हुई थी इसीलिए गवरी में इसका स्वांग लाया जाता है जहां हीरा उसे मार गिराता है। इस कारण गवरी से बणजारों को चिढ़ लगी हुई है। देखने पर खून खौलता है और आपस में मरने-मारने को उतारु हो जाते हैं।

शादी में लड़की को बड़ी कठिनाई से गुजरना पड़ता है अन्यथा लड़की कुंवारी ही रह जाती है। मेलों-ठेलों में या आपस में प्रेमाचार के कारण शादी होने की प्रथा इनमें नहीं है। ऐसी घटना यदि घट जाय तो उस परिवार की बुरी तरह खबर ले ली जाती है। एकबार एक लड़का एक लड़की को लेकर भाग गया। जात वालों को जब पता लगा तो 62 हजार रूपये लड़के वाले को जुर्माना भरना पड़ा।

विवाह हेतु लड़की की परीक्षा के लिए 60 किलो के लगभग वजन का पत्थर ऊंचा कर झेलना पड़ता है और इसमें भी उसकी नस-नस कड़-कड़ की आवाज करती हुई सुनी जाय तब उसे विवाह योग्य समझी जाती है। इससे पूर्व बैल की पीठ पर जमीन से गुणती उठाकर लड़की से डलवाई जाती थी तब ही उसके विवाह की बात पक्की होती थी। ऐसी कठिन परीक्षा में सफल नहीं होने के कारण कई बार लड़कियां कुंवारी रहते सफेद केश तक ले लेती हैं। छोगा की भुआ ने भी 40 वर्ष की उम्र में शादी की।

इनकी जात में बहिन का अपने भाई के प्रति बड़ा ममत्व रहता है। जहां भी बहिन अपने भाई से मिलेगी, गायकी में गाथा सुनायेगी और आंखों से आंसू छलकाती मिलेगी। अपने पहनावे में साफे पर इन लोगों को बड़ा नाज रहता है। जीतेजी सिर से साफा कभी नहीं गिरने देंगे। लड़ाई में उस पर 500-500 तक के वार झेलेंगे।

ये लोग शिकारी भी पहुंचे हुए होते हैं। इसके लिए ये अच्छे कुत्ते पालते हैं। पाले हुए कुत्ते हिरण-खरगोश का शिकार कर लाते हैं। इसके लिए विशेष किस्म का ये लोग लावर कुत्ता पालते हैं। इसे ये शराब पिलाते हैं और पूरा प्रशिक्षण देते हैं। छोटेपन से ही कुत्ते को ये खड्डे में डाल देते हैं जिसमें रह वह कूदना सीखता है और धीरे-धीरे शिकार के लिए तैयार करते हैं।

सन्तान जन्म के पश्चात जच्चे को अन्य चीजों के साथ बकरे का कलेजा खिलाया जाता है। मच्छी भी खिलाई जाती है। बच्चों के झडूले रखने की प्रथा भी इनमें पाई जाती है। चारभुजा के मन्दिर जाकर ये अपने बच्चों के झडूले उतरवाने की रस्म पूरी करते हैं।

अपने बैलों पर ये लोग सामान लादकर व्यापार करते हैं। बैल अजमेर तथा सिरोही के अच्छे होते हैं जो तीन-तीन मन तक का भार अपनी पीठ पर उठा लेते हैं। गायों पर ये कभी सामान नहीं ढोते हैं और बैल पर कभी सवारी नहीं करते हैं। गधे के नाम से तो इन्हें घृणा ही है। उसे तो छूना भी ये अनिष्ट समझते हैं। यहां तक कि यदि किसी ने गधा छू लिया और इन्हें पता लग गया तो उसे जाति से बहिष्कृत तक कर दिया जाता है।

यायावरी जीवन व्यतीत करने वाले बणजारे एक-एक लाख पोटी (बैलों) पर व्यापारिक वस्तुओं का सामान लादे एक स्थान से दूसरे स्थान लंबी यात्राएं करते थे। ऐसे बणजारे लखी बणजारे नाम से जाने जाते। विश्वसनीय व्यापारी के रूप में लंबे रास्ते में जहां-जहां ये विश्राम करने के लिए अपने डेरे डालते, वहां-वहां तालाब, कुए, बावड़ी, मंदिर, छतरियां, कुंड, चबूतरे आदि बनवाते थे। यही नहीं, धन कुबेर के रूप में इनकी अच्छी साख थी। रास्ते में ये किसी निश्चित स्थान पर अपना गुप्त खजाना रखते, उस पर ये कोई निशान बना देते जिसे केवल ये ही जान पाते।

पलानाकलां, उदयपुर के बणजारों के पुरोहित लहरीलाल सुखवाल ने 24 दिसंबर 2015 को बताया कि हमारे देश में लबाना, गारू, गंवारिया, बामणिया जैसी बणजारों की और भी कई जातियां निवास करती हैं। बामणियों का संबंध मेवाड़ से रहा है। राजसमंद जिले का बामणियाकलां गांव इनका उद्भव स्थल है। कभी यह गांव एक बड़े व्यापारिक केन्द्र के रूप में जाना जाता था। गोगाथला, कुरज, गिलूंड, पछमता, सिन्देर, पोटला, खाखला, रेलमगरा, जीतावास जैसे परगने इससे प्रभावित थे। बामणिया के चारों ओर बनास नदी का प्रवाह था। पास ही तांबे की प्रसिद्ध खानें थीं।

बामणिया वर्षों तक रूपसिंह नामक गौड़ सरदार की कर्मस्थली रहा। रूपसिंह गोड़वाड़ क्षेत्र का प्रमुख सामंत था। इसने गांव के मध्य विष्णु मन्दिर बनवाया। यहीं उसकी स्मृति लिये छह खम्भों वाली विशाल छतरी बनी हुई है। रूपसिंह का पिता आसो गौड़ और माता भीलवाड़ा ठाकुर जसा चावड़ी की पुत्री सुन्दर कुंवर थी। रूपनारायण मंदिर में पुत्ररत्न की याचना से पुत्र होने के कारण बालक का नाम रूपसिंह रखा गया। यह जबर्दस्त योद्धा था। उदयपुर के चंपाबाग में समस्त सरदारों, उमरावों के मध्य अपनी वीरता के प्रदर्शन स्वरूप महाराणा ने इसे 12 गांवों की जागीरी दी।

एकबार मारवाड़ के एकड़मल (एक्का) ने मेवाड़ में लूटपाट कर तबाही मचा दी। महाराणा ने उसे पकड़ लाने का बीड़ा घुमाया। इसे किसी ने स्वीकार नहीं किया तब रूपसिंह तैयार हुआ। यह एकड़मल रूपसिंह का मौसेरा भाई था। रूपसिंह के लाख समझाने पर भी यह नहीं माना तब युद्ध अनिवार्य था। इस द्वन्द्व-युद्ध में रूपसिंह के हाथों एकड़मल बुरी तरह मारा गया।

रूपसिंह एकड़मल का सिर लेकर जाने लगा कि उसकी विवाहिता धनकुंवरी ने रास्ता रोक रूपसिंह को फटकारते हुए कहा कि मेरा सुहाग उजाड़ ठीक नहीं किया। अच्छा यही है कि तू अपनी पत्नी के रूप में मुझे स्वीकार कर अन्यथा श्राप दूंगी। यह सुन रूपसिंह असमंजस की स्थिति में आ गया। अन्ततः रूपसिंह धनकुंवर के साथ बामणिया आया। वह महाराणा का कोपभाजन बना और धनकुंवर को अंगीकार करने पर क्षत्रियों ने उसका सामाजिक बहिष्कार कर दिया। पृथक होने के कारण उसे गरासयणा कहा गया। इससे रूपसिंह का नया वंश और नई शाखा गरासिया नाम से प्रचलित हुई।

लहरीलाल ने बताया कि रूपसिंह का व्यक्तित्व बड़ा रौबदार था। बड़ी नोकदार मूंछें, गठीला शरीर, फौलादी सीना, कानों में कुण्डल, सिर पर बड़ा साफा, तेजस्वी आंखें, चांदी की मूठ वाली तलवार तथा भाला उसके व्यक्तित्व में चार चांद देता था।

यात्रा के दौरान जहां ये पड़ाव डालते हैं उस स्थल को 'मलाण' कहते हैं। राजस्थान में ताली, सांभर, बूंदी, कोटा, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, राजसमंद, झालावाड़, पचपदरा, घोसुंडा, जूणदा ; मध्यप्रदेश में राजगढ़ जिले का लटूरी, अमरामाता ; मंदसौर जिले का भड़का, पठार, कुंडला, भादवामाता, मंदसौर उज्जैन, रतलाम, खंडवा, धार, इंदौर, राजगढ़, शाजापुर, भोपाल, रायसेन, आमद का पठार ; वागड़ का प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा इनके मलाण स्थल रहे और कालांतर में ये वहीं बसते भी गये।

समय के बदलाव ने इन्हें आर्थिक दृष्टि से बहुत कमजोर बना दिया। इनकी बारह गोत्रों में गोड़ तथा गरासिया प्रमुख ऊंची गोत्र है। प्रत्येक टोडे में नायक का पद वंशानुगत होता है। शुभ कार्यों पर नाई, ढोली, बलाई, रैदास समाज सेवक के रूप में हाजिर रहते हैं। रूपा ने पहले बछुआ नाई, लखमा ढोली, हरिया बलाई तथा रैदास को तैयार किया। हरिया चरवादार तथा रैदास बैठकों की बिछात व्यवस्था तथा हुक्के-तमाखू की सेवा करता था।

बणजारों में कुलदेवता के रूप में रूपा ही सर्वोपरि देवता है। झगड़े अथवा बलवे के समय पगड़ी-साफा फैला देने पर शांति हो जाती है। गोड़ गरासियों में आशापाल, कछावा बबलू, दायमा पलाश पीपल, चौहान बांस आदि वृक्ष काटना वर्जित है। प्रथम पुत्र पर झडूला, विवाह पर रूपा नायक का रातिजगा दिया जाता है।

पुरुष छाता काम में नहीं लेते। महिला चूड़ा नहीं पहनती। बनास नदी में नंगे पैर से चलते हैं। सरबरसिंघ के स्थानक पर बनी प्रसादी औरतें नहीं खातीं और न झूठे बर्तन ही साफ करती हैं। जीमते वक्त बिछात वर्जित है। श्वसुर पक्ष द्वारा गोठ देने पर ही दूल्हे का कंठाडोर तथा जनेऊ उतारी जाती है। जनेऊ धारण किया दूल्हा मांस मदिरा तमाखू का प्रयोग नहीं करता।

गणगौर का त्यौहार इनमें विशेष उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर ये लोग स्वयं मिट्टी की गणगौर माता की आदमकद मूर्ति बनाते हैं और उसका पूरा सिणगार कर पूजते हैं। रेल की हमारी यह सहज सर्वे-यात्रा बड़ी पूंजीगत रही। शायद बहुत कुछ भटकाव पर भी हमें जो चीज नहीं मिल पाती वह हमें चलती गाड़ी में चलते-चलते ही मिल गई। देखते-देखते खेमली स्टेशन आ गया और हमारे पास बैठा बणजारा मंडल अपना अता-पता दे, अपने घर आने की मनुहार कर हमसे विदा हो गया। हम लोग बणजारों की बणवट में खोते उदयपुर आ उतरे।

नेक्स्ट-जनरेशन मोबाईल बैंकिंग ऐप लॉन्च

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने नेक्स्ट जनरेशन मोबाईल बैंकिंग ऐप का

अनावरण किया, जो ऑन द गो रहते हुए ग्राहकों को अपने बैंक खाते की सुगम पहुंच प्रदान करेगा। नेक्स्ट-जन ऐप द्वारा ग्राहक अपनी सुविधा के अनुसार अपने तरीके से बैंकिंग कर सकेंगे। इसमें सहज, समझदार नैविगेशन है और इसमें विस्तृत सिक्योरिटी तथा एक्सेस के लिए बायोमीट्रिक लॉग इन जैसी खूबियां हैं। यह विनिमयों को 3 आसान श्रेणियों- पे, सेव एवं इन्वेस्ट में समूह में बांटकर ग्राहकों के लिए वित्तीय एवं तकनीकी शब्दावली के उपयोग की जरूरत को समाप्त करता है। ग्राहक डैशबोर्ड देख सकते हैं, जो बैंक के साथ सभी एस्सेट्स एवं दायित्वों का 360 डिग्री वित्तीय स्नैपशॉट प्रदान करता है। ऐप पर उपलब्ध 120+विनिमय वर्तमान नैविगेषन के गहन अध्ययन एवं ग्राहकों की शोध एवं फीडबैक के साथ जुड़े यूसेज़ के पैटर्न के आधार पर चुने जाते हैं।

छत्तीसगढ़ के जांजगीर में अखिल भारतीय अग्रवाल महिला मंडल द्वारा 29 नवंबर को आयोजित राजस्थानी लोकनृत्यों के प्रशिक्षणोपरांत उदयपुर की शाकुन्तलम संस्था की संस्थापिका डॉ. शकुन्तला पंवार एवं सचिव गोवर्धन पंवार का गुरुवंदना महोत्सव में सम्मान करती बालिकाएं एवं महिलाएं।

रनिंग ड्राई यात्रा का स्वागत

उदयपुर। कोलगेट पामोलिव इंडिया लि. को पानी की एडवोकेट और ग्लोबल एथलीट मीना गुली द्वारा ग्लोबल अभियान, रनिंग ड्राई यात्रा का भारत में स्वागत किया। कोलगेट लोगों को पानी बचाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

लोगों को ब्रश करने के दौरान नल को बंद करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह स्पॉन्सरशिप कोलगेट के ग्लोबल सेव वॉटर अभियान का हिस्सा है। कोलगेट द्वारा अर्थ डे 2018 के बाद यूगॉव के साथ किए गए अध्ययन में यह देखा गया कि दुनिया में सेव वाटर कैम्पेन प्रतिवर्ष 50 बिलियन गैलन पानी की बचत कर सकता है। मीना गुली ने कहा कि पानी की कमी एक ग्लोबल समस्या है, जो पृथ्वी पर हर किसी को प्रभावित करती है। दुनिया में 4 बिलियन लोगों को साल में कम से कम एक माह पानी की कमी होती है। मुझे गर्व है कि मैं कोलगेट जैसे ब्रांड के साथ मिलकर काम कर रही हूँ, जो रोज़ पानी बचाने के सरल एवं प्रभावशाली तरीको से जागरुकता बढ़ा रहा है।

चार नवंबर को न्यूयार्क मैराथन में लॉन्च किया गया रनिंग ड्राई रनिंग ड्राई अभियान भारतीय यात्रा के दौरान गुरुग्राम, बावल, अचरोल, जयपुर, किशनगढ़, रैला, भीलवाड़ा, चित्तौडगढ़, बांसवाड़ा, दाहोद, वड़ोदरा, भरुच, अंकलेश्वर, सूरत, नवसारी, बलसाड़, ठाणे से गुजर कर 6 दिसंबर को मुंबई पहुंचेगा।

महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम

उदयपुर। ओरल केयर मार्केट की अग्रणी कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) लि. ने सेवामंदिर के साथ गठबंधन कर अलसीगढ़ में महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम की शुरुआत की। इस पहल के तहत कोलगेट और सेवा मंदिर समन्वित रूप से फूलों की खेती, पोल्ट्री आदि आर्थिक गतिविधियों के ज़रिए महिला सशक्तीकरण और उनके आर्थिक विकास में मदद करेंगे। साथ ही अलसीगढ़ गांव के नौ आदिवासी क्षेत्रों में जल संवर्द्धन कार्यक्रम में मदद करेंगे। इस कार्यक्रम से 3500 से अधिक लोग लाभन्वित होंगे।

कोलगेट पामोलिव इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर इसाम बछलानी ने अलसीगढ़ में बाँध के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि हम समुदायों की सेवा करने में विश्वास रखते हैं। कंपनी महिला सशक्तीकरण का पूरी तरह से समर्थन करती है। अपने सहयोगी सेवा मंदिर के साथ हम कार्य कर क्षेत्र की महिलाओं के आर्थिक उत्थान के लिए कार्यरत हैं। हम इस क्षेत्र में भविष्य में भी कार्य करते रहेंगे। हमारा विश्वास है कि हरेक को भविष्य में मुस्कराने का अवसर मिलना चाहिए।

सेवा मंदिर के चीफ एग्ज़ीक्यूटिव रौनक शाह ने कहा कि कोलगेट की मदद से शुरू किए गए महिलाओं के सशक्तीकरण के कार्यक्रम से महिलाओं को नए अवसर मिलेंगे और वे फूलों की खेती व घर में पोल्ट्री पालन से अपना दैनिक जीवन बेहतर बना सकेंगी।

छात्रवृत्ति के लिए आवेदन आमंत्रित

उदयपुर। हिन्दुस्तानी म्यूजिक (वोकल या गायन-ख्याव/ध्रुपद,आधात वाद्ययंत्र-तबला/पखावज) में उन्नत प्रशिक्षण में छात्रवृत्ति के लिये विद्यार्थियों से आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। छात्रवृत्ति हर साल 7,500/- रूपये प्रतिमाह (अप्रैल 2019 से मार्च 2020) है। ncpaschol-arships@gmail.com पर ईमेल के जरिये या एक लिफाफे में आवेदन (म्यूजिक एजुकेशन पर बायो-डेटा) भेज सकते है। इस लिफाफे पर सिटी-एनसीपीए स्कॉलरशिप फॉर यंग म्यूजिशियंस (इंडियन म्यूजिक) लिखकर नेशनल सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट्स, नरिमन प्वाइंट, मुंबई 400021 में 31 दिसंबर 2018 तक या उससे पहले भेज सकते है एवं 31 दिसंबर 2018 के बाद मिले आवेदनों को स्वीकार नहीं किया जायेगा।

आवेदन में व्यक्ति के नाम, जन्म तारीख, पता, सम्पर्क नंबर/वैकल्पिक सम्पर्क नंबर, प्रोफेशनल क्वालिफिकेशन, ईमेल आइडी, म्यूजिक टीचर/गुरू, प्रशिक्षण के कुल वर्ष और उपलब्धियों /पुरस्कार/स्कॉलरशिप एवं परफॉर्मेंस के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण विवरण का ब्योरा अवश्य शामिल करना जरूरी हैं। चुने गये अभ्यर्थियों को ईमेल या टेलीफोन के माध्यम से सूचित किया जायेगा।

सिनेमेटोग्राफी प्रशिक्षण 'स्ट्रीमिंग फ्रेम्स'

उदयपुर। कैनन इंडिया ने स्ट्रीमिंग फ्रेम्स के दूसरे संस्करण का आयोजन ड्रीम पैलेस में किया गया। स्ट्रीमिंग फ्रेम्स

पेशेवर फिल्म निर्माताओं और उद्योग विशेषज्ञों द्वारा गहन व्यवहारिक प्रशिक्षण की एक अनूठी श्रृंखला है। यह अपनी तरह का पहला सिनेमेटोग्राफी प्रशिक्षण कार्यक्रम था। यह प्रशिक्षण फील्ड प्रोजेक्ट्स पर समूचे भारत में डब्ल्यूईबी मंच के लिये पेशेवर सिनेमेटोग्राफी वर्कफ्लो पर दिया गया। कैनन इंडिया के कंज्यूमर इमैजिंग एंड इंफॉर्मेशन सेंटर के वाइस प्रेसिडेन्ट एडी उडागावा ने कहा कि उद्योग विशेषज्ञों के साथ संवाद करने के लिये उभरते फिल्म निर्माताओं को मंच प्रदान करने के लिए कार्यशाला में संपूर्ण प्रोडक्शन वर्कफ्लो पर प्रशिक्षित किया गया। उन्हें वेब/ब्रॉडकास्ट मीडिया के लिये फिल्म निर्माण और कंटेन्ट डिजाइन का गहन ज्ञान प्रदान किया गया।

जावर का डीएवी एचजेडएल स्कूल नॉटआउट दौर में पहुंचा

उदयपुर। जावर स्थित डीएवी एचजेडएल स्कूल ने स्कूल गेम्स फेडरशन ऑफ इंडिया, एसजीएफआई द्वारा असम के कोकराझार में आयोजित 64वीं नेशनल स्कूल गेम्स अंडर14 फुटबाल चैम्पियनशिप में पदार्पण करते हुए पहले ही प्रयास में नॉकआउट दौर में प्रवेश किया। ग्रुप जी में शामिल इस टीम ने अपने सभी तीन मैच जीते। टूर्नामेंट देशभर की 31 टीमें हिस्सा ले रही हैं।

डीएवी एचजेडएल, जावर में जिंक फुटबाल अकादमी के खिलाड़ी खेल रहे हैं। इस टीम को राजस्थान, आंध्रप्रदेश और दिल्ली के साथ एक ग्रुप में रखा गया था और इस टीम ने तीनों टीमों को हराकर अगले दौर का टिकट कटाया।

जिंक फुटबाल अकादमी के प्रोजेक्ट हेड चेतन मिश्रा ने कहा कि हमारे खिलाड़ियों ने शानदार खेल दिखाया और अपनी भावनाओं पर काबू रखते हुए पूरी परिपक्वता के साथ उम्मीद के मुताबिक खेले। मुझे इस युवा टीम पर गर्व है क्योकि नए हालात में लगातार तीन मैच जीतना कभी भी आसान नहीं होता है। हम अब नॉकआउट दौर की ओर देख रहे हैं और मुझे यकीन है कि हम पहले जैसा खेल दिखाते हुए आने वाली टीमों का सामना करेंगे।

पेप्सी ने सिमॉन फुलर के नए ग्रुप नाउ यूनाइटेड को पेश किया

उदयपुर। पेप्सी ने सिमॉन फुलर के नए प्रोजेक्ट ग्लोबल पॉप ग्रुप नाउ यूनाइटेड और देश के सबसे पसंदीदा रैपर्स में से एक बादशाह के बीच साझेदारी की घोषणा की। सोनी म्युज़िक इंडिया द्वारा प्रबंधित बादशाह और पूरी दुनिया के 14 सिंगर्स और डांसर्स 'हाउ वी डू इट' शीर्षक से एक गाना रिकॉर्ड किया जिसे 29 नवंबर को रिलीज़ किया गया। पेप्सी नाउ यूनाइटेड की पहली भारत यात्रा में भी मदद करेगी। यह ग्रुप मुंबई, दिल्ली, आगरा और जयपुर जाएगा और भारत व पूरी दुनिया के प्रशंसकों के साथ अपने अनुभव साझा करेंगे।

तरुण भगत, निदेशक-मार्केटिंग, हाइड्रेषन एंडकोला, पेप्सिको इंडिया ने कहा कि बादशाह और नाउ यूनाइटेड के बीच नए गाने के लिए समझौता उभरते हुए कलाकारों को अपनी कहानियां कहने, अपनी कला साझा करने और नए एवं मौजूदा प्रशंसकों से जुड़ने के लिए ताकतवर मंच मुहैया कराने के उद्देश्य का हिस्सा है।

यह समझौता वन डिजिटल इंटरटेनमेंट द्वारा किया गया है जो देश का प्रमुख क्रिएटर और वीडियो नेटवर्क है और बादशाह के डिजिटल वेंचर का प्रबंधन भी करता है।

इंजीनियरों का वैश्विक महाकुंभ उदयपुर में 21 से 23 दिसंबर को

उदयपुर। द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियरिंग (इंडिया) के उदयपुर सेंटर की मेजबानी में 33वीं इंडियन इंजीनियरिंग कांग्रेस उदयपुर के अनंता होटल एवं रिसोर्ट में 21 से 23 दिसंबर तक होगी। इसका विषय इंटीग्रेशन ऑफ टैक्नोलॉजीस : इमर्जिंग इंजीनियरिंग पैराडिज्म' (टेक्नोलॉजीज का एकीकरण: उभरती इंजीनियरिंग मिसाल) रहेगा। इसी के साथ 23 दिसंबर को इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया)(आईईआई) की 99वीं एनुअल जनरल मीटिंग भी होगी। यह जानकारी प्रेसवार्ता में कांग्रेस के आयोजन समिति अध्यक्ष ईं. सोहनसिंह

राठौड़ ने दी। इस अवसर पर कांग्रेस के प्रवक्ता ईं. सी. पी. जैन, आयोजन समिति के सचिव ईं. येवंतीकुमार बोलिया, ईं. एम. के. माथुर भी उपस्थित थे। ईं. सोहनसिंह राठौड़ ने बताया कि इस कांग्रेस में देश और विदेशों में लगभग 110 शोधपत्र 15 इंजीनियरिंग विषयों पर शामिल किए जाएंगे। विभिन्न देशों के प्रतिनिधिमंडल इसमें शामिल होकर प्रौद्योगिकी एकीकरण पर विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार करेंगे। आठ अकादमिक व्याख्यान और उद्योगों जगत के नामी विशिष्ट वक्ताओं के भाषण व प्रस्तुतीकरण होंगे।

100 मैराथन दौड़ेगी आस्ट्रेलिया की मीना गुली

उदयपुर। जल संरक्षण एवं वैश्विक जल संकट पर लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए 100 दिनों में 100 मैराथन के अभियान पर निकली आस्ट्रेलिया की मीना गुली शोरूम, खेत, फैक्ट्री, स्कूल इत्यादि जगह लोगों को जल के प्रति जागरूक कर रही है। भारत में प्रॉविजमा लाइफ इस इवेंट को संचालित कर रहे है, जबकि बबल कम्यूनिकेशन इवेंट के पार्टनर है।

लोगों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से रंनिग ड्राई अभियान को न्यूयार्क में 4 नवम्बर को शुरू करने के बाद पूर्व अधिवक्ता एवं इन्वेस्टमेंट बैंकर मीना गुली का यह अभियान 11 फरवरी 2019 को न्यूयार्क शहर में 100वीं मैराथन के साथ पूरा होगा। मीना गुली राजस्थान के अनेकों शहरों एवं गाँवो में जाकर अपने अभियान को आगे बढ़ाते हुए जल के प्रति जागरूकता पैदा कर रही है।

मीना ने कहा कि मेरी दौड़ें जल का संरक्षण करने के लिऐ एकजुट होने के लिए दुनिया के लिए आह्वान है। हमें जीवित रहने के लिए जिस पानी की जरूरत है, वो कम होता जा रहा है। इस अभियान को रंनिग ड्राई का नाम दे रहे है क्योकि हमें जिस संकट का सामान करना पड़ रहा है। हम उसके प्रति गंभीरता की इच्छा करते है। यही कारण है कि मैंने करने के लिए कुछ अचूक चुना है। दुनिया भर में 100 दिनों में 100 मैराथनों में दौड़ना, यह दिखाने के लिए कि पानी के प्रति पूर्णत: प्रतिबद्ध होना कैसा होता है। हम सभी दुनिया के जल संकट को हल करने में मदद कर सकते है। हम में सें हरक इंसान अपना योगदान देने में सक्षम है। मानव सभ्यता को अभूतपूर्व संकट का सामना करना पड़ रहा, जनसंख्या और अर्थिक विकास के वर्तमान सामान्य तौर तरीकों अनुमान अनुसार 2030 तक ताजा पानी की उपलब्धता में अनुमानित 40 प्रतिशत कमी आएगी।

प्रकाश को मिला सम्बल

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान ने कोटड़ा निवासी प्रकाश बंबुरिया को आर्थिक संबल दिया है। ट्रस्ट अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि प्रकाश के

माता-पिता बचपन में ही चल बसे। दादा-दादी गरीबी और वृद्धावस्था के कारण उसकी देखभाल ठीक से नहीं कर पा रहे थे। संस्थान द्वारा कोटड़ा में आयोजित शिविर में बच्चे की हालत देखकर परिवार की सहमति से संस्थान में लाया गया और नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में भर्ती कर लिया। पांच वर्ष की उम्र से प्रकाश ने संस्थान में रहते हुए अपनी ग्यारवीं तक की पढ़ाई पूरी की। वह दसवीं बोर्ड की परीक्षा में 73 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण लाया। उसकी योग्यता को देखते हुए संस्थान ने बाहरवीं में अच्छे अंक हासिल करने के उद्देश्य से उसे कोचिंग दिलाने का निर्णय लिया। इसके लिए 6500 रुपये का कोचिंग शुल्क प्रदान किया गया।

गिट्स के दो छात्रों का हेक्सावेयर टेक्नोलोजिज लि. में चयन

उदयपुर। गीतांजली इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज में ऑफ केम्पस ड्राइव द्वारा बी.टेक. कम्प्यूटर इन्जिनियरिंग ब्रान्च के दो विद्यार्थियों का चयन प्रमुख आई.टी. कम्पनी हेक्सावेयर टेक्नोलोजिज लिमिटेड में तीन लाख के सालाना पैकेज पर ट्रेनी सॉफ्टवेयर इन्जिनियर के पद पर हुआ। संस्थान के ट्रेनिंग एण्ड प्लेसमेन्ट हैड अरविन्द सिंह पेमावत ने बताया कि हेक्सावेयर आई.टी. क्षेत्र की प्रमुख कम्पनी है। इसका मुख्यालय नवी मुम्बई में है।

कम्पनी ऑफिसियल ने सर्वप्रथम पीपीटी के माध्यम से कम्पनी के बारे में विद्यार्थियों अवगत कराया। उसके पश्चात् ऑनलाइन परीक्षा, टेक्नीकल इन्टरव्यू एवं एच. आर. के माध्यम से दो विद्यार्थी मीनल शर्मा एवं धीरज सोलंकी का चयन तीन लाख के सालाना पैकेज पर ट्रेनी सॉफ्टवेयर इन्जिनियर के पद पर किया। संस्थान के निदेशक डॉ. विकास मिश्र व वित्त नियंत्रक बी.एल. जांगिड़ ने चयनित विद्यार्थियों के सवर्णिम भविष्य की कामना की।

ज़िंक को 'नॉन-फेरस बेस्ट परफोरमेन्स अवार्ड'

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक को 'नॉन-फेरस लार्ज इण्टिग्रेटेड मैन्यूफेक्चरिंग प्लान्टस' की श्रेणी में उत्कृष्ट कार्य के लिए 'इण्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ मेटल्स नॉन-फेरस बेस्ट परफोरमेन्स अवार्ड-2018' से पुरस्कृत किया गया है। इण्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ मेटल्स द्वारा 56वें राष्ट्रीय धातुकर्मी दिवस समारोह में यह अवार्ड मुख्य अतिथि भारत सरकार के इस्पात मंत्रालय के सचिव विनय कुमार से मनोज नसीने, यूनिट हेड- ज़िंक स्मेल्टर देबारी एण्ड शीबा मशूरवाला, उप-प्रबन्धक-टेक्नोलॉजी डवलपमेंट ने ग्रहण किया।

ज़िंक के वाइस प्रेसीडेन्ट एण्ड हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेषन पवन कौशिक ने बताया कि ज़िंक पर्यावरण नियमों का सख्ती से अनुपालन तथा सभी प्रचालनों में पर्यावरण अनुकूल तकनीकों का उपयोग करती है। यह पुरस्कार ज़िंक के जीरो वेस्टेज एवं जीरो डिस्चार्ज के प्रयासों को प्रमाणित करता है।

हैप्पे और उबर फॉर बिज़नेस में भागीदारी

उदयपुर। फिनटैक् कंपनी हैप्पे और कैब सर्विस कंपनी उबर ने साझेदारी की घोषणा की है जिससे कारोबार के सिलसिले में उबर की टैक्सियों से सफर करने वाले मुसाफिरों को इस व्यय को करने व इसका हिसाब रखने में बहुत मदद मिलेगी।

इस नई भागीदारी से हैप्पे अपने कॉर्पोरेट ग्राहकों को सहायता देगी जिससे की वे स्पष्ट रूप से जान सकें की उनके कर्मचारियों के परिवहन पर कितना खर्च हो रहा है; इससे उन्हें लागत बचाने के साथ-साथ कर्मचारियों की उत्पादकता व संतुष्टि बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। हैप्पे के सह-संस्थापक व सीईओ अंशुल राय ने कहा कि हैप्पे में हम जो भी करते हैं उसके केन्द्र में हमारे प्रयोक्ताओं के जीवन को आसान बनाने का ख्याल रहता है- चाहे उन्हें किसी भी उपकरण द्वारा कहीं से भी अपने खर्च संभालने की सुविधा देना हो या खर्च को खुद दर्ज करने की जरूरत से छुटकारा दिलाना हो। उबर के साथ हमारी भागीदारी इसी फलसफे के मुताबिक है। व्यापारिक यात्रियों को अब अपनी यात्रा का विवरण खुद दर्ज करने की आवश्यकता नहीं है। उबर फॉर बिज़नेस के प्रमुख अर्जुन नोहवर ने कहा कि उबर फॉर बिज़नेस को पूरे भारत के कॉर्पोरेट्स से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिलना जारी है।

लक्स गोल्डन रोज अवार्ड्स का शानदार आयोजन

उदयपुर। यूएन के हीफॉरशी अभियान को समर्थन देते हुए, लक्स गोल्डन रोज अवार्ड्स का शानदार आयोजन किया गया। इसमें शाहरुख खान, अक्षय कुमार, वरुन धवन, रेखा, आलिया भट्ट, माधुरी दीक्षित-नेने, जैकलिन फर्नांडीज, काजोल, ऐश्वर्याराय बच्चन, करीनाकपूर खान, करिश्मा कपूर, हेमा मालिनी, जीनत अमान जैसे मेगास्टार शामिल हुए। समारोह में तापसी पन्नू को ब्रेकथ्रू ब्यूटी ऑफद ईयर, जाह्नवी कपूर को इमरजिंग ब्यूटी ऑफ द ईयर, हेमा मालिनी को आइकॉनिक ब्यूटी ओवर द डेकेड्स, ऐश्वर्या राय बच्चन को टाइमलेस ब्यूटी, शर्मिला टैगोर, हेलेन और जीनत अमान को बोल्डेयस्टी ब्यूटी ओवर द डेकेड्स, करीना कपूर खान, सोनम कपूर आहूजा, शिखा तलसानिया, स्वारा भास्कर को कॉन्फिडेंट ब्यूटी ऑफ द ईयर, काजोल और शाहरुख खान को टाइमलेस जोड़ी, माधुरी दीक्षित-नेने, जैकलिन फर्नांडीज को करिश्मैटिक ब्यूटी ऑफद ईयर, आलिया भट्ट को अनस्टौंपेबल ब्यूटी ऑफद ईयर तथा रेखा को लक्स गोल्डन रोज लिज़ेण्ड्री ब्यूटी ऑफद ईयर अवार्ड्स प्रदान किये गए।

कार्तिक स्नान में.....

(पृष्ठ एक का शेष)

इनमें अच्छे कर्म से अच्छे फल और बुरे कर्म से बुरे फल की परिणति निहित मिलती है। सूरज नारायण, पथवारी, धर्मराज, गणेश, देवरानी-जेठानी, महादेव-पारवती, तुलसां, गंगा-जमना, कातिक, लपसी-तपसी, घणलट, राम-लिछमण, डोकरी, लूंबिया, गडूरी जैसी कई कहानियां मैंने लिखी हैं। असत पर सत की, बुरे पर भले की, पाप पर पुण्य की जीत बताते हुए ये कहानियां प्रत्येक को अच्छे भले कर्म करने की ओर प्रवृत्त करती हैं।

काति नहाने वाली महिलाएं प्रतिदिन व्रत रखती हैं। नये कपड़े नहीं धारण कर धोये हुए कपड़े पहनती हैं। न माथा गूंथती हैं और न मेंहदी लगाती हैं। कुछ महिलाएं जोड़े से नहाती हैं। महिलाओं के अतिरिक्त लड़कियां भी काति लेती हैं। मैंने छोटी से छोटी सात बरस की लड़की को भी काति नहाते देखा है। इस माह के आखिरी पखवाड़े में, शरद पूर्णिमा से काति पूर्णिमा तक कई व्रत करने पड़ते हैं। दोनों पूर्णिमाओं के बीच आने वाले रविवार सूर्य के प्रतीक माने गये हैं। इन दिनों के व्रत अधिक कठोरता लिये होते हैं।

आठम (अष्टमी) को पथवारी पूजी जाती है। नवमी (अखय नम) को तुलसां के स्थान पर रात्रि जागरण किया जाता है। सभी औरतें तुलसां को कद्दू, नारियल, सीताफल तथा कापड़ा चढ़ाती हैं। ग्यारस (एकादसी-आंवला ग्यारस) को आंवली की पूजा की जाती है। इसी की छाया में बैठकर इस दिन व्रत खोला जाता है। आंवली की पूजा कुंकुम, लच्छा, मेंहदी, काजल से की जाती है। घी का दीपक जलाया जाता है। ढोली ढोल बजाता है। ब्राह्मण होम शांति कराता है। आंवली को हैसियत के अनुसार कापड़ा, लूगड़ा ओढ़ाया जाता है। नारियल, कद्दू भी चढ़ाया जाता है। आंवली की परिक्रमा देकर उसकी कहानी कही जाती है। इन व्रतों के अतिरिक्त तारा भोजन, छोटी-बड़ी राम सांकली, नारायण-तारायण, इकन्तर वास, पचीरथी जैसे व्रत भी होते हैं जिन्हें औरतें श्रद्धानुसार करती हैं। काति स्नान दो वर्ष से लेकर चार, पांच, सात बरस तक किया जाता है और अन्त में इच्छानुसार पांच, सात दम्पत्ती को भोजन कराकर पूरा जाता है।

कार्तिक स्नान की कहानियों में लूंबिया का बड़ा महत्व प्रतिपादित किया गया है। लूंबिया इसके मूल में भी रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं। इसीलिए इसकी कहानी भी विशेष रूप में कही-सुनी जाती है और इसके नाम का व्रत भी किया जाता है।

लूंबिया की कहानी में लूंबिया को कृष्ण का खास सखा बताया गया है जो बड़ा चंचल और रसिक प्रवृत्ति का है। कहानी यह है-

कृष्ण गोपियों से मिलने जाते तो लूंबिया को अपने साथ नहीं ले जाते।

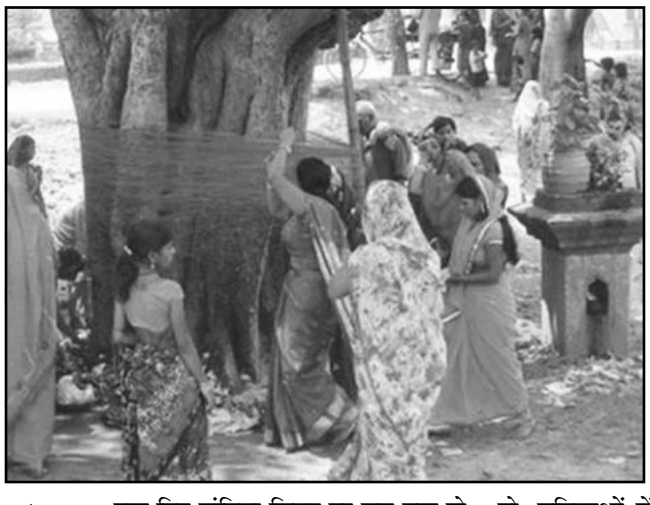

एक दिन लूंबिया जिद्द पर चढ़ गया तो कृष्ण ने उसे अपनी मर्यादा में रहने को कह कर अपने साथ ले लिया। कृष्ण कदंब पर बैठकर बांसुरी बजाने में लीन हो गये और लूंबिया घूमता हुआ तालाब पर पहुंच गया जहां गोपियां नंगी नहा रही थीं। लूंबिया ने उनके वस्त्र चुरा लिये और छिप कर बैठ गया। वस्त्र नहीं पाने पर गोपियां दुखी हुई। उन्होंने कृष्ण को कहा। कृष्ण समझ गये कि यह लूंबिये की ही करामात है। लूंबिये को ढूंढ़ा। उसने कहा कि वस्त्र तभी दूं जब गोपियां कार्तिक स्नान का फल मुझे दें।

कृष्ण ने यह बात नहीं मानी। गोपियों ने भी कहा कि सासू से लुकछिप कर आती और नहाती हैं, दिनभर भूखे मरती हैं और फल इसे मिल जाय, ऐसा नहीं हो सकता। तब लूंबिये ने कहा- 'एक दिन मेरे नाम का व्रत हो और प्रतिदिन कही जाने वाली कहानियों में मेरी कहानी कही जाय। कांसे के बर्तन में मेरे नाम के मोतीचूर के लड्डू, साड़ी के साथ मेरे नाम का कापड़ा दिया जाय और कोई नंगी नहीं नहाये।' गोपियों ने यह बात स्वीकार करली। लूंबिये ने उनके वस्त्र लौटा दिये।

कहते हैं तब से बहुत जल्दी नहाना प्रारम्भ हुआ ताकि किसी पुरुष की शक्ल तक नजर न आये। यों शरीर पर किसी प्रकार का आवरण नहीं रखकर नग्न स्नान करने का अपना महत्व तो रहा ही है।

आज भी देश के कुछ भागों में देवी के प्रसन्नार्थ महिलाएं स्नान के पश्चात अपने सिर पर दीपक लिए नग्न यात्रा के लिए निकल पड़ती हैं। इन्हें रास्ते में हजारों स्त्री-पुरुष देखते हैं पर कोई बुरा नहीं कहता। कुछ भी हो, महिलाओं में इस स्नान का महत्व उनके जनम-मरण और परण तीनों से जुड़ा हुआ है।

GMCH
GEETANJALI HOSPITAL
HEALTH IS HAPPINESS

GEETANJALI
Cardiac Centre

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
NABH
ACCREDITED

आपके विश्वास और हमारी कोशिशों से केवल 5 वर्षों में
15000 कार्डियक एवं 1000 न्यूरोवास्कूलर प्रोसिज़र की सफलता के बाद
न्यूरोलोजिकल एवं कार्डियोलोजिकल आपातकालीन स्थिति **जैसे लकवा, ब्रेन हेमरेज़ व हृदयाघात**
के त्वरित उपचार के लिए **गीतांजली हॉस्पिटल** में स्थापित

Artis Zee
with Pure

दूसरी
समर्पित कैथ लैब

2nd CATH LAB

कैथ लेब की विशेषताएं
- जर्मन तकनीक से युक्त अत्याधुनिक कैथ लेब
- उपचार के दौरान **C.T. Scan** की सुविधा
- 3 D तस्वीर
- रेडियल लाउंज : त्वरित एंजियोग्राफी एवं तुरंत डिस्चार्ज
- रेडिएशन की दृष्टि से अत्यधिक सुरक्षित
- जटिलतम एर्ओटिक इंटरवेशन एवं न्यूरो वेसक्यूलर प्रोसीजर संभव

कार्डियोलोजी, पेरीफरल वास्कूलर नेफ्रोलोजी एवं न्यूरोलोजिकल उपचार सुविधाएं

एंजियोग्राफी एंजियोप्लास्टी पेसमेकर/ ICD/CRT ASD ए.एस.डी. (Device) VSD वी.एस.डी. (Device) PDA पी.डी.ए. (Device)
BMV बी.एम.वी., BAV बी.ए.वी., BPV बी.पी.वी. दिल के छेद की Device Rotablation, IVUS, FFR
आधुनिक तकनीक से नसों का इलाज स्ट्रोक एम्बोलेक्टोमी एन्यूरिज़म कॉइलिंग एर्ओटिक इंटरवेन्शन (EVAR) केरोटिड आर्टरी स्टेन्टिग
रेडियोफ्रिक्वेन्सी एबलेशन (Varicose Vein) पेरीफेरल आर्टरी स्टेन्टिग रक्त स्त्राव में एम्बोलाईजेशन डीवीटी का आधुनिक ईलाज

Blocked AV फिस्टुला (Fistula) के उपचार का एकमात्र केन्द्र

डायलिसिस AV फिस्टुला / ग्राफ्ट एंजियोग्राफी, एंजियोप्लास्टी, थ्रोम्बेक्टोमी एवं डायलिसिस परमाकथ प्लेसमेन्ट (Dialysis Permacath Placement)

गीतांजली हॉस्पिटल अधिकृत है

- भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना (BSBY)
- भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ECHS)
- कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC)
- भारत संचार निगम लिमिटेड (BSNL)
- भारतीय खाद्य निगम (FCI)
- राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड (RSMM)
- हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड (HZL)
- उत्तर पश्चिमी रेलवे
- राष्ट्रीय बाल सुरक्षा कार्यक्रम (RBSK)
- राजस्थान सरकार के सेवारत कर्मचारियों एवं पेंशनर्स के लिए अधिकृत
- सभी महत्वपूर्ण टी.पी.ए. (TPA) व इन्श्योरेन्स

गीतांजली हॉस्पिटल
नेशनल हाईवे -8 बायपास, उदयपुर (राज.) +91 978 459 6209 | +91 294 250 0044
www.geetanjalicardiaccentre.com | www.geetanjalihospital.co.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।